अमृत विचार

लोक दर्पण

रविवार, 1 जून 2025 www.amritvichar.com

जीवन पर संकट: पर्यावरण में घुलता प्लास्टिक कचरा

बीते कुछ वर्षों से प्लास्टिक प्रदूषण एक वैश्विक समस्या बनता चुका है। एक अनुमान के मुताबिक हर साल 19-23 मिलियन टन प्लास्टिक कचरा जलीय पारिस्थितिकी तंत्र में रिसता है, जिससे झीलें, नदियां और समुद्र प्रदूषित होते हैं। प्लास्टिक प्रदूषण आवासों और प्राकृतिक प्रक्रियाओं को बदल सकता है तथा पारिस्थितिकी तंत्र की जलवायु परिवर्तन के अनुकूल होने की क्षमता को कम कर सकता है। साथ ही लाखों लोगों की आजीविका, खाद्य उत्पादन क्षमताओं और सामाजिक कल्याण को सीधे प्रभावित कर सकता है। प्लास्टिक के पर्यावरणीय, सामाजिक, आर्थिक और स्वास्थ्य जोखिमों का मूल्यांकन जलवायु परिवर्तन, पारिस्थितिकी तंत्र के क्षरण और संसाधनों के उपयोग जैसे अन्य पर्यावरणीय तनावों के साथ किया जाना चाहिए।

डॉ. भवतोष शर्मा
वैज्ञानिक यूकॉस्ट, देहरादून

पर्यावरण के संरक्षण को ध्यान में रखकर सबसे बड़ा अंतर्राष्ट्रीय दिवस 'विश्व पर्यावरण दिवस' के रूप में हर साल मनाया जाता है। अगर हम अतीत में जाएं तो पता चलता है कि अंतर्राष्ट्रीय पर्यावरणीय नीति निर्धारण के संदर्भ में साल 1972 एक टर्निंग पॉइंट के रूप में रहा, जब दुनिया में पर्यावरणीय समस्याओं को लेकर पहली बड़ी कॉन्फ्रेंस का आयोजन संयुक्त राष्ट्र के तत्वावधान में स्वीडन की राजधानी स्टॉकहोम में 5 से 16 जून के मध्य 1972 को किया गया, जिसको मानवीय पर्यावरण कॉन्फ्रेंस कहा गया। साथ ही इसको स्टॉकहोम कॉन्फ्रेंस के नाम से भी जाना गया। आगे चलकर संयुक्त राष्ट्र की जनरल असेंबली ने एक रेजोल्यूशन पास किया, जिसमें 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस की मान्यता प्रदान की गई। साथ ही संयुक्त राष्ट्र के अंतर्गत विभिन्न सरकारों एवं संगठनों से 5 जून को हर वर्ष वैश्विक स्तर पर पर्यावरण के संरक्षण हेतु गंभीर पर्यावरणीय जागरूकता कार्यक्रमों के आयोजनों हेतु कहा गया। इस प्रकार 1973 में सबसे पहले 'विश्व पर्यावरण दिवस' का आयोजन किया गया। इसका उद्देश्य आम जनमानस में पर्यावरण के प्रति गंभीर चेतना व जागरूकता करने के साथ-साथ पर्यावरण के विभिन्न अन्य पहलुओं जैसे ओजोन परत का क्षरण, पर्यावरण में हानिकारक रासायनिक पदार्थ का मिलना, रेगिस्तान का बढ़ना, भूमंडलीय ताप वृद्धि आदि गंभीर विषयों पर राजनीतिक रूप से भी बड़े जोश के साथ कार्य करने का आवाहन किया गया। तब से लेकर अब तक कई मिलियन लोग इतने वर्षों में पर्यावरणीय कार्यों के साथ जुड़े हैं तथा उन्होंने अपनी उपभोक्तावादी आदतों में सुधार लाने का प्रयास किया और विभिन्न राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय पर्यावरण संबंधी नीतियों को अंगीकृत भी किया है।

आजकल हम देखते हैं कि हमारे आसपास का पर्यावरण अर्थात हवा, पानी, मिट्टी निरंतर दूषित होते जा रहे हैं। हवा में नाइट्रोजन और सल्फर के हानिकारक ऑक्साइडस, पार्टिकुलेट मैटर्स इत्यादि की मात्रा शहरी क्षेत्र में लगातार बढ़ती जा रही है। विभिन्न औद्योगिक इकाइयों से निकलने वाले धुएं में उपस्थित 'ब्लैक कार्बन' अब शहरी क्षेत्र के अलावा ग्रामीण क्षेत्र तथा हिमालयी भूभाग की तरफ भी पहुंचने लगा है, जिससे वहां की बायोडायवर्सिटी के साथ-साथ ग्लेशियरों के लिए भी खतरा उत्पन्न हो गया है। जंगलों में लगने वाली आग भी पर्यावरण के दूषित होने में महत्वपूर्ण कारक है।

इसके अलावा प्लास्टिक कचरे का जलाया जाना आसपास के साथ-साथ दूरस्थ स्थानों पर भी पहुंचकर मानव स्वास्थ्य और पर्यावरण पर विपरीत प्रभाव डालता है।

विश्व पर्यावरण दिवस प्रत्येक वर्ष एक विशिष्ट थीम के साथ आयोजित किया जाता है। यह थीम वर्ष भर पर्यावरण संरक्षण केंद्रित कार्यों में अंगीकृत की जाती है। इस वर्ष संयुक्त राष्ट्र द्वारा विश्व पर्यावरण दिवस की थीम भी 'एंडिंग ग्लोबल प्लास्टिक पॉल्यूशन' निर्धारित की गई है अर्थात दुनिया में बढ़ते हुए प्लास्टिक प्रदूषण के समाप्त होने की ओर हमारे प्रयास सुनिश्चित हो सके और हम वैश्विक स्तर पर प्लास्टिक प्रदूषण को कम करते-करते उसे लगभग समाप्त की ओर ले जाएं। यह मुख्य थीम पर्यावरण में प्लास्टिक की उपस्थिति से होने वाले दुष्प्रभावों के दृष्टिगत रखी गई है।

हमारा दैनिक जीवन प्लास्टिक की बनी वस्तुओं से प्रारंभ होता है और पूरा दिन हम विभिन्न प्रकार के उपकरणों इत्यादि को प्लास्टिक के स्वरूप में ही प्रयोग करते हैं। वैज्ञानिक अध्ययनों में यह स्पष्ट हो चुका है कि पर्यावरण में बढ़ता हुआ प्लास्टिक कचरे का मलवा न केवल धरती के सभी घटकों मिट्टी व पानी को बहुत ही घातक रूप से प्रभावित कर रहा है, बल्कि भूमि की उर्वरा शक्ति लगातार छीण हो रही है।

प्लास्टिक में प्रयोग होने वाले विभिन्न हानिकारक केमिकल्स मिट्टी और पानी में मिलकर हमारे कृषि उत्पादों एवं खाद्य पदार्थों को दूषित कर रहे हैं। कृषि उत्पादों में यह हानिकारक केमिकल्स हमारी खाद्य श्रृंखला के माध्यम से सभी वनस्पतियों, मिट्टी, सतही जल और यहां तक कि भूमिगत जल को भी प्रदूषित करना शुरू कर चुके हैं और इससे उत्पन्न खाद्य पदार्थों का सेवन करने से जीवधारियों में विशेष रूप से मनुष्यों में विभिन्न गंभीर बीमारियां होना शुरू हो चुकी हैं, जिसमें कैंसर एक मुख्य बीमारी है, जिसका एक प्रमुख कारण यह हानिकारक केमिकल्स ही हैं। इसके मूल में प्लास्टिक ही है इसलिए विषय की गंभीरता को देखते हुए संयुक्त राष्ट्र द्वारा मानव स्वास्थ्य और पर्यावरण पर प्लास्टिक प्रदूषण के पड़ने वाले प्रभावों की वजह से ही इस वर्ष की थीम निर्धारित की गई है। आज प्लास्टिक का कचरा धरती के कोने-कोने तक पहुंच चुका है और समय आ गया है कि हम इस प्लास्टिक के उपयोग से बचें। इसका उपयोग न्यूनतम हो। प्लास्टिक उपकरणों का, प्लास्टिक की बनी चीजों का प्रयोग करने में हम न्यूनतम की ओर जाएं। साथ ही वैकल्पिक रूप से उपलब्ध अन्य पर्यावरण स्नेही उपकरणों, वस्तुओं के प्रयोग की तरफ जाएं तो निश्चित ही इस वर्ष की थीम अपने उद्देश्यों को काफी हद तक पा सकेगी।

विश्व पर्यावरण दिवस पर विशेष

पारिस्थितिक तंत्र पर प्रभाव

प्लास्टिक प्रदूषण सभी प्रकार की भूमि, ताजे जल के स्रोतों तथा सागरीय पारिस्थितिक तंत्र को घातक रूप से प्रभावित कर रहा है। आज हमारे द्वारा उपयोग किया गए प्लास्टिक उत्पाद कचरे के रूप में नदियों, झीलों, सागरों, महासागरों में पहुंच चुके हैं और यह कचरा छोटे-छोटे प्लास्टिक के टुकड़ों में टूट कर माइक्रो प्लास्टिक के रूप में समुद्री जीव जंतुओं विशेष रूप से मछलियों में पहुंच चुका है, जिसके फल स्वरुप इन जीवों के साथ-साथ मानवीय जीवन के लिए भी गंभीर खतरा उत्पन्न हो गया है। आज माइक्रोप्लास्टिक मनुष्य के शरीर में पहुंच चुका है और विभिन्न गंभीर बीमारियों का कारण भी बन रहा है। प्लास्टिक प्रदूषण से जैव विविधता की हानि होने, पारिस्थितिक तंत्र की गिरावट और जलवायु परिवर्तन का मुख्य कारण है।

प्लास्टिक मूलत: कार्बन की बड़ी-बड़ी श्रृंखलाओं के उच्च अणुभार वाले सिंथेटिक पॉलीमर (संश्लेषित बहुलक) होते हैं, जो विभिन्न प्राकृतिक पदार्थ जैसे पेट्रोलियम प्रोडक्ट्स, प्राकृतिक गैस आदि से छोटे अणु, जिन्हें मोनोमर कहते हैं, उनके पॉलीमराइजेशन से लंबी-लंबी श्रृंखलाओं वाले पॉलीमर बनते हैं, जिन्हें प्लास्टिक कहते हैं।

सबसे पहले 1856 में एक ब्रिटिश केमिस्ट अलेक्जेंडर पार्क्स ने नाइट्रो सेल्युलोज से प्लास्टिक को तैयार किया, लेकिन साल 1907 में बेल्जियम-अमेरिकी केमिस्ट लियो हेंड्रिक बेकलैंड ने 'बैकेलाइट' का आविष्कार किया, जो पूर्णतया सिंथेटिक प्लास्टिक के रूप में जाना गया।

शुरुआत में प्लास्टिक के विकास के पीछे प्राकृतिक रूप से उपलब्ध सामग्री से प्लास्टिक सामग्री का निर्माण एवं उपयोग का उद्देश्य रहा था, जो कि बाद के सालों में रासायनिक रूप से बनाई गई प्राकृतिक सामग्री और अंतत: बाद में पूरी तरीके से सिंथेटिक प्लास्टिक पदार्थ तक पहुंच गया, जिसका आज उद्योगों एवं लगभग हर क्षेत्र में प्रयोग किया जाता है।

विभिन्न प्रकार के प्लास्टिक में करीब 13000 से अधिक प्रकार के कैमिकल्स मिले रहते हैं, जिनमें से 7000 प्रकार के केमिकल्स को विभिन्न अध्ययनों में खतरनाक गुणों वाला पाया गया है।

क्या कहते हैं अध्ययन

अध्ययन बताते हैं कि दुनिया में 460 मिलियन मीट्रिक टन प्लास्टिक प्रतिवर्ष उत्पन्न होता है, जिसका उपयोग विभिन्न प्रकार की वस्तुओं के निर्माण में होता है।

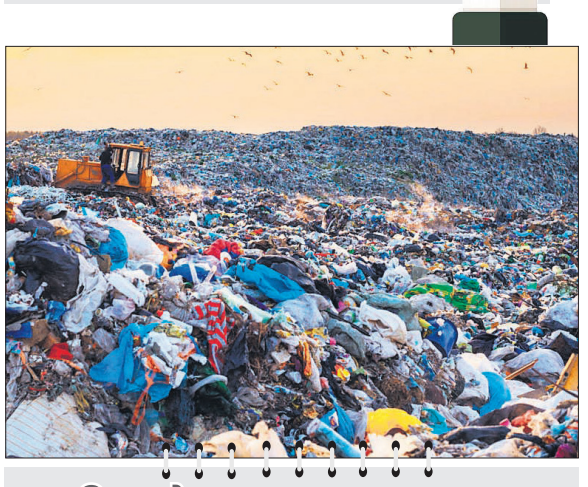

प्लास्टिक के दुष्प्रभाव

आज प्लास्टिक से मनुष्य पर होने वाले विभिन्न दुष्प्रभावों में हार्मोंस का असामान्य होना, प्रजनन क्षमता में कमी होना, तंत्रिका तंत्र पर दुष्प्रभाव पड़ना, हाइपरटेंशन, कार्डियोवैस्कुलर बीमारियां, कैंसर आदि प्रमुख हैं। शायद इसीलिए रिपब्लिक ऑफ कोरिया विश्व पर्यावरण दिवस को इस वर्ष की थीम 'एंडिंग ग्लोबल प्लास्टिक पॉल्यूशन' के आधार पर होस्ट करने जा रहा है, जिसका उद्देश्य भी पृथ्वी को प्लास्टिक के प्रदूषण से मुक्ति दिलाना और सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल्स (सतत विकास लक्ष्य) के उद्देश्यों को प्राप्त में योगदान देना है। आज प्लास्टिक के प्रदूषण को समाप्त करने के लिए हम सभी को अपने दैनिक जीवन में प्लास्टिक के उपयोग को कम करते जाना होगा, प्लास्टिक के रीसाइक्लिंग को बढ़ावा देना होगा और प्लास्टिक प्रदूषण के उचित प्रबंधन के लिए नियमों एवं नीतियों को जन सहभागिता के साथ प्रभावी ढंग से लागू किया जाना चाहिए तभी हम अपनी धरती को प्लास्टिक प्रदूषण से मुक्त कर पाएंगे और इस पर निवास करने वाले सभी जीवधारियों और वनस्पतियों के जीवन की रक्षा हो सकेगी। पर्यावरण संरक्षण की दिशा में ये प्रयास निश्चित ही मील का पत्थर साबित होंगे।

जन सरोकार से धरती पर बनी रहेगी हरियाली

पर्यावरण संरक्षण की दिशा में अब आम लोगों ने भी सोचना शुरू कर दिया है। बढ़ती गर्मी और पर्यावरण असंतुलन के बढ़ते खतरों से लोग सावधान होने लगे हैं। जीवन के लिए पेड़ जरूरी हैं यह बात सभी जान गए हैं। कार्यक्रमों में पौधों का वितरण इसी की कड़ी है। समारोहों में प्लास्टिक की प्लेटों की जगह पत्तल और प्लास्टिक के गिलास की जगह कुल्हड़ का दौर लौटने लगा है। ज्येष्ठ माह के दूसरे बड़े मंगल को बड़ी संख्या में भंडारों में पत्तल के दौने नजर आए। प्लास्टिक की प्लेटें न इस्तेमाल करने की अपीलें भी की गईं। विनोद कुमार सिंह पर्यावरण संरक्षण की दिशा में वर्ष 2002 से काम कर रहे हैं। अपने कार्यक्रमों में अतिथियों को स्मृति चिन्ह की जगह पौधे देते हैं। प्रदेश स्तर पर वह लोगों को जागरूक करने का काम करते हैं। वह लोगों को यह समझाते हैं कि सिर्फ पौधा लगाना ही जिम्मेदारी नहीं है, पौधा लगाएं तो उसके वृक्ष बनने तक उसकी देखभाल भी करें। पौधा लगाने के लिए बहानों की तलाश करें। जन्मदिन पर पौधा लगाएं, शादी की वर्षगांठ पर पौधा लगाएं, अपने परिवार के मृत सदस्यों की स्मृति में पौधा लगाएं। पर्यावरण संरक्षण की दिशा में काम कर रहे लोगों को सम्मानित करने का काम भी ट्रस्ट की ओर से किया जाता है। लोगों को प्रेरित किया जा रहा है कि वह साइकिल का इस्तेमाल करें। वाहनों का प्रयोग कम करें। ट्रस्ट ने सरकार को पत्र लिखा है कि सरकारी कालोनियों से सचिवालय और अन्य विभागों तक बस चलाने की व्यवस्था करे ताकि ज्यादा से ज्यादा लोग अपने वाहनों के बजाय बस के जरिए ऑफिस जाने लगें। इसी तरह से एक परिवार के लोग अगर एक ही स्थान पर जा रहे हों, तो कोशिश करें कि एक ही वाहन का प्रयोग करें, अलग-अलग वाहन से जाने से बचें। पर्यावरण संरक्षण का संदेश देने के लिए नुक्कड़ नाटकों और कठपुतली शो की शुरुआत भी हुई है। कलाकार जब गीत-संगीत के साथ जब पर्यावरण असंतुलन से होने वाले खतरों के बारे में बताते हैं, तो लोग ध्यान से उन्हें सुनते हैं। उसका लोगों पर असर होता है। पर्यावरण संरक्षण के लिए आम लोगों की जागरूकता बहुत अच्छा संकेत है, क्योंकि अकेले सरकार की कोशिशें इतना बड़ा काम नहीं कर सकती हैं। अगर हर नागरिक पौधों का संरक्षण सीख ले, तो धरती पर दोबारा से हरियाली को लौटाना आसान हो सकता है।

-विनोद कुमार सिंह
अध्यक्ष, प्रगति पर्यावरण संरक्षण ट्रस्ट लखनऊ

हर पेड़ बदल सकता है जीवन और भाग्य

विकास की अंधी दौड़ में हमने सबसे ज्यादा बलि पेड़ों की दी है। इसी कारण आज दुनिया तमाम संकटों का सामना कर रही है और पर्यावरण संरक्षण पर सरकारों को भारी-भरकम रकम खर्चा करना पड़ रहा है। प्रकृति के साथ खिलवाड़ का नतीजा प्राकृतिक आपदाओं के रूप में सामने आ रहा है। यदि मनुष्य सिर्फ अपने लिए ही प्रकृति की उपयोगिता और महत्ता समझ ले तो अभी देर नहीं हुई है, पृथ्वी पर जीवन को बचाया जा सकता है। यह स्थापित सत्य है कि प्रत्येक व्यक्ति का जन्म किसी न किसी राशि के नक्षत्र में होता है और प्रत्येक ग्रह, राशि और नक्षत्र का एक प्रतिनिधि वृक्ष होता है। आयुर्वेद की औषधियों की भांति ज्योतिष में भी पुरातन काल से वृक्षों का इस्तेमाल ग्रहों का दुष्प्रभाव दूर करने के लिए किया जाता रहा है। दरअसल, प्रत्येक वृक्ष किसी न किसी ग्रह से संबंधित है। कुछ वृक्षों को तो विशेष रूप से चिह्नित किया गया है, जो ग्रह शांति के लिए सर्वाधिक उपयोगी साधन माने जाते हैं। जाहिर है कि प्रकृति विज्ञान के जरिए ज्योतिषीय गणना से प्राप्त होने वाले फलित का जीवन में लाभ उठाया जा सकता है। इसी सिद्धांत के आधार पर कानपुर देहात के तिस्ती गांव में पर्यावरण आश्रम स्थापित करने वाले स्वामी जितेंद्रिया लोगों के जीवन में आनंद भरने का काम कर रहे हैं। वह ज्योतिष और भविष्य विज्ञान की गणना से प्राप्त होने वाले फलित के अनुरूप लोगों को प्रकृति से जुड़ने, पौधारोपण करने का उपाय बताकर उनकी परेशानियां दूर करने का प्रयास करते हैं। स्वामी जितेंद्रिया के अनुसार नक्षत्र, ग्रह और राशियों के वृक्ष को जानकर यदि आप अपने घर के आसपास उचित स्थान पर उसका पौधरोपण करते हैं, तो इसका फलदायी लाभ मिलना तय है। जैसे-जैसे पौधे का विकास होता है, वैसे-वैसे आपके ग्रह नक्षत्र भी सही होना शुरू हो जाते हैं। राशि के अनुसार पेड़ लगाने से न केवल वह ग्रह शांत होता है, बल्कि जैसे-जैसे पौधा बढ़ता है, व्यक्ति को उसका उतना ही ज्यादा लाभ मिलता है। राशि व ग्रह के अनुसार पेड़ लगाने के सकारात्मक प्रभावों के फलस्वरूप सुख-समृद्धि और शांति की प्राप्ति होती है। स्वामी जी के अनुसार यदि शनि मारकेष है, तो राजपथ पर वट वृक्ष लगाने से आयु बढ़ती है। गुरु निर्बल है या किसी अन्य ग्रह के कारण अल्पायु योग बनाता है, तो गुरुवार के दिन पीपल का वृक्ष लगाना फलदायी साबित हो सकता है। चंद्रमा का किसी तरह का दोष है, तो पलाश का एक फलदार वृक्ष लगाने से प्रभाव सकारात्मक हो जाएगा। स्वामी जितेंद्रिया प्रकृति आधारित कथाएं कहते हैं। इनमें लोगों को बताते हैं कि किस ग्रह की शांति के लिए किस पौधे का रोपण करना चाहिए। ऐसा इसलिए ताकि लोग पौधरोपण करें और पर्यावरण का संरक्षण हो सके। स्वामी जितेंद्रिया अब तक चार हजार पीपल, बरगद, नीम, पाकड़, गूलर आदि के पौधे रोपे जा चुके हैं। उन्होंने अपने आश्रम में विविध प्रकार की औषधियों वाले दो सौ से अधिक पौधे लगाए गए हैं। उद्धार ज्योति समेत पर्यावरण संरक्षण पर कई महत्वपूर्ण पुस्तकें लिखी हैं, जो हरीतिमा का संदेश देती हैं। स्वामी जी गुरु दीक्षा देने के बाद दक्षिणा में पौधरोपण का संकल्प दिलवाते हैं और लोगों से कहते हैं कि प्रकृति से किसी न किसी रूप में जुड़े रहिए, यह लाभदायक ही सिद्ध होगा।

- स्वामी जितेंद्रिया, कानपुर

वॉटर हीरो का एक ही मिशन जल-जंगल और जमीन का संरक्षण

नैनीताल जिले के छोटे से गांव से निकला एक युवा, जिसने न नौकरी को चुना, न शहर की चकाचौंध, उसने चुना जंगल, मिट्टी, पानी और अपने पहाड़ों की पुकार को, जिसे आज लोग वॉटर हीरो के नाम से जानते हैं। ओखलकांडा ब्लॉक के नाई गांव के चंदन नयाल, जिनका मिशन है जल, जंगल और जमीन का संरक्षण करना। 32 वर्षीय चंदन नयाल नैनीताल जिले के ओखलकांडा ब्लॉक के गांव नाई के रहने वाले हैं, जहां आज भी सड़क नहीं पहुंची है, लेकिन वहां से एक ऐसा बदलाव शुरू हुआ है, जिसकी बयार आसपास दिखने लगी है। चंदन नयाल को भारत सरकार के जल शक्ति मंत्रालय की ओर से वॉटर हीरो का खिताब भी दिया गया है, उनकी ये यात्रा 12 साल पहले शुरू हुई थी, जब वे पढ़ाई के दौरान छुट्टियों में गांव लौटे थे। चंदन बताते हैं कि मैंने देखा कि हमारे जंगल जल रहे हैं, जहां कभी चौड़ी पत्ती के बांज, बुरांश, काफल और रयाज के मिश्रित जंगल होते थे, अब वहां सिर्फ सूखे चीड़ के जंगल रह गए हैं। जंगलों में आग लग रही थी, पानी के स्रोत सूख रहे थे, बस यहीं से उन्हें जीवन की दिशा मिल गई। चंदन सिर्फ जल संरक्षण में ही नहीं रुके, उन्होंने जंगलों की आत्मा को भी फिर से जीवित किया। उन्होंने अब तक करीब 60 हजार से ज्यादा चौड़ी पत्ती के मिश्रित पौधे लगा लिए हैं, जिनमें बांज, बुरांश, खर्सु, रयाज, फल्याट, काफल आदि जैसे पेड़ शामिल हैं। चंदन बताते हैं कि हमने करीब 8 हेक्टेयर बंजर भूमि को फिर से हरा-भरा बना दिया है, जहां पहले सिर्फ सूखा चीड़ था, वहां आज पक्षियों की चहचहाहट है, नमी है, जीवन भी है। आज चंदन नया के काम को न सिर्फ जल शक्ति मंत्रालय ने सराहा है, बल्कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी मन की बात कार्यक्रम में चंदन का जिक्र किया और उन्हें पर्यावरण योद्धा भी बता चुके हैं। चंदन ने पॉलिटेक्निक की पढ़ाई की थी। पढ़ाई के बाद नौकरी का मौका था, लेकिन उन्होंने शहर में रहना नहीं चुना। चंदन कहते हैं जिन पेड़ों ने मुझे छांव दी, जिन नदियों ने पाला, अगर मैं उन्हें ही भूल जाऊं तो पढ़ाई किस काम की।

शरीर भी दान कर चुकें हैं चंदन

चंदन नयाल साल 2017 में अपना शरीर सुशीला तिवारी मेडिकल कॉलेज को दान करने का निर्णय ले चुके हैं। इसके पीछे उनका कहना है कि मैं इन पेड़ों से इतना प्यार करता हूं, इनके लिए इतनी मेहनत करता हूं कि मेरी मृत्यु के बाद भी मेरे लिए एक भी पेड़ न कटे। आज चंदन सिर्फ अपने गांव तक सीमित नहीं हैं, वो आसपास की पंचायतों में भी जाकर स्थानीय युवाओं को प्रेरित कर रहे हैं। उन्हें सिखा रहे हैं कि कैसे वे अपने जल स्रोतों को पुनर्जीवित कर सकते हैं।

रंग लाए प्रयास

चंदन ने तय किया कि वो न सिर्फ अपने गांव के जंगलों को बचाएंगे, बल्कि जो जल स्रोत खत्म हो चुके हैं, उन्हें भी पुनर्जीवित करेंगे। उन्होंने अपने दम पर बीड़ा उठाया और वन व वन्य जीवों के लिए जीवनदायिनी बनकर उभरे। उन्होंने पारंपरिक जल संरक्षण तकनीकों पर ध्यान देना शुरू किया। चाल, खाल, पोखर और खंटियां ये छोटे-छोटे गड्ढे होते हैं, जो वर्षा जल को रोकते हैं और धीरे-धीरे जमीन में समाकर भूजल स्तर को बढ़ाते हैं। आज चंदन अपने क्षेत्रों में 6 हजार से ज्यादा चाल-खाल बना चुके हैं, जिनमें आज भी वर्षा जल जमा होता है। चंदन बताते हैं कि जैसे-जैसे हमने चाल-खाल बनाना शुरू किया, वैसे-वैसे ओखलकांडा क्षेत्र में आग की घटनाएं बहुत कम हो गईं।

पौधारोपण से ही सुरक्षित भविष्य संभव

बरेली शहर के व्यापारी और समाजसेवी पर्यावरण की अलख जला रहे हैं। वे अपने घर के आंगन में ही पौधे लगाकर बच्चों की तरह उनकी देखभाल करते हैं। साथ ही हरी-भरी सब्जी भी उगा रहे हैं। समय-समय पर वे पर्यावरण की दिशा में महत्वपूर्ण काम भी करते रहते हैं। समाजसेविका पारुल मलिक बताती हैं कि पौधारोपण से ही सुरक्षित भविष्य संभव है। धरती को हरा बनाए रखने के लिए हर नागरिक को पौधे लगाना चाहिए। उनका कहना है कि आज लगाया गया पौधा आने वाली पीढ़ियों की सांसों की गारंटी है। वहीं कारोबारी महेंद्र पाल सिंह बताते हैं कि उन्हें बचपन से ही पौधे लगाने का शौक है। उन्होंने अपने घर में गुलाब, बेला से लेकर अन्य फूलों के साथ तरह-तरह के खूबसूरत पौधे हैं। पौधों के साथ उन्होंने अपने मकान में ही सब्जी की भी खेती की है। वे रोज नियम से पौधों को पानी लगाकर उनकी देखभाल करते है। वहीं राशिद चिराग ने पिछले 12 साल से पौधें लगा रहे हैं। उन्होंने अपने घर की छत पर ही गार्डन बना रखा है, जिसमें हर रंग के फूल और गुलाब की कई तरह के पौधे शामिल हैं। चिराग समय-समय पर लोगों को पौधरोपण करने के लिए जागरूक भी करते हैं।

-पारुल मलिक, समाजसेविका बरेली

शब्द चर्चा

बानू मुश्ताक की 'हॉर्ट लैंप' स्त्री संघर्षों की दास्तां

साहित्य सिर्फ कोरी कल्पना या फंतासी नहीं। साहित्य जीवन का यथार्थ है और हर स्वांस में रचा बसा है। कन्नड़ लेखिका और सामाजिक कार्यकर्ता, अधिवक्ता बानू मुश्ताक की अंग्रेजी में अनुदित कृति हॉर्ट लैंप को बुकर पुरस्कार से नवाजा गया है। यह भारत की भाषायी साहित्य के लिए यह बेहद गर्व और गौरव का विषय है। इससे यह साबित होता है कि लेखन किसी धर्म, भाषा, जाति और सीमा में बधा नहीं है। आमतौर पर सर्वहारा वर्ग की पीड़ा एक जैसी होती हैं, उनकी जाति या धर्म कुछ भी हो। यह पुरस्कार भारतीय भाषाओं के लिए एक संजीवनी है। बुकर पुरस्कार भाषा के नाम पर लड़ने वाले एक सभ्य समाज के लिए साफ संदेश है। अगर भाषा का विभेद होता तो दीपा भस्थी की तरफ से कन्नड़ से अनुदित बानू मुश्ताक की सिर्फ बारह लघुकथाओं के संकलन हॉर्ट लैंप को बुकर पुरस्कार से सम्मानित नहीं किया जाता। भाषा और साहित्य सीमा से बहुत दूर है। अब तक यह अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार छह भारतीय लेखकों को मिल चुका है। इसके लिए बानू मुश्ताक के साथ दीपा भी बधाई की पात्र हैं। क्योंकि यह उनकी पहली अनुदित कृति है, जिसे यह सम्मान मिला है।

प्रभुनाथ शुक्ल
वरिष्ठ पत्रकार

बानू मुश्ताक दक्षिण भारतीय लेखिका हैं। बानू मूलरूप से कन्नड़ भाषा में अपना लेखन करती हैं। बानू को जो बुकर पुरस्कार मिला है वह कन्नड़ में लिखी उनकी लघुकथा संग्रह से चुनी कुछ लघुकथाओं के अंग्रेजी अनुवाद पर दिया गया है। उन्होंने कुल छह लघुकथा संग्रह, एक उपन्यास, एक निबंध और एक कविता संग्रह लिखा है। उनकी रचनाओं का अनुवाद हिंदी, तमिल, मलयालम और उर्दू में किया गया है। उन्हें इसके अलावा और भी साहित्य पुरस्कार मिले हैं। साहित्य में सबसे अहम सवाल है कि आप कितना लिख रहे हैं यह मायने नहीं रखता है। वजूद इस बात का है कि आप क्या लिख रहे हैं। लिखा तो बहुत कुछ जा रहा है या बहुत कुछ लिखा गया है, लेकिन सबको बुकर नहीं मिला।

बुकर को ध्यान में रखकर लिखना भी संभव नहीं है। क्योंकि साहित्य कोई तकनीक नहीं एक जीवंत कला है, जो बगैर जीवन के जीवंत नहीं होती। बानू लंकेश पत्रिका से भी जुड़ी थीं और बेंगलुरु आल इंडिया रेडियो में भी काम किया।

बानू मुश्ताक (77) की स्कूली शिक्षा की शुरुआत भी कठिन चुनौतियों से हुईं यही उनके लेखकीय जीवन की चुनौती बनी। उनका जन्म 1948 में कर्नाटक के मुस्लिम परिवार में हुआ था। शिवमोगा के कन्नड़ मिशनरी स्कूल में पिता के काफी प्रयास के बाद उनका दाखिला भी आठ साल की उम्र में इस शर्त पर हुआ था कि उन्हें छह माह में कन्नौड़ को लिखना पढ़ना आना चाहिए, नहीं तो स्कूल छोड़ना पड़ेगा। क्योंकि बानू एक मुस्लिम परिवार से रहीं, जहां स्कूल की शर्त उनके लिए एक चुनौती थीं, लेकिन उन्होंने कर दिखाया। मुश्ताक ने 1980 में मुस्लिम समाज में कट्टरता को कम करने के लिए काम किया। उन्होंने मस्जिदों में भी मुस्लिम महिलाओं के प्रवेश की वकालत की, जिसकी वजह से उनके परिवार का सामाजिक बहिष्कार भी हुआ। उन्हें जान से मारने की धमकियां भी मिली। हालांकि उन्होंने स्कूलों में मुस्लिम लड़कियों के हिजाब पहनने का समर्थन किया था, जिसका विवाद कर्नाटक के शिक्षा संस्थानों में आज भी मुद्दा है।

बानू मुश्ताक ने मुस्लिम समाज में औरतों और दूसरी समस्याओं को बड़ी गहराई से परखा। ऐसी समस्याओं ने उन्हें प्रभावित किया, जिसे उन्होंने कहानी या लघुकथा का आधारा बनाया। लिखने का शौक उन्हें बचपन से था, उनकी पहली कहानी 26 साल की उम्र में प्रजामाता में प्रकाशित हुईं इसके बाद लेखन की दुनिया में उन्होंने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। जिस हॉर्ट लैंप के लिए उन्हें अंतर्राष्ट्रीय बुकर पुरस्कार मिला है, उसमें 1990 से 2023 तक की लघुकथाएं हैं, जिनमें मुस्लिम समाज की महिलाओं का संघर्ष दिखाया गया है। अनुवादक दीपा भस्थी भी पहली भारतीय हैं, जिन्हें यह सम्मान मिला है।

मुश्ताक कहानियों का अनुवाद साल 2022 में पहली बार दीपा भस्थी ने अंग्रेजी में किया, जिसमें उन्होंने हॉर्ट लैंप नाम से कन्नड़ से कुछ चुनी हुईं कहानियों का अंग्रेजी में अनुवाद किया, जिन्हें बुकर पुरस्कार 2025 से सम्मानित किया गया है। इस पुरस्कार में 50 हजार पाउंड की राशि लेखक को मिलती है, जिसमें आधी राशि अंग्रेजी अनुवादक के हिस्से में जाती है। क्योंकि बुकर पुरस्कार सिर्फ अंग्रेजी कृति या उस भाषा में अनुदित संग्रह को ही मिलता है। इसका मकसद साफ है कि अच्छा साहित्य सभी तक पहुंचना चाहिए, क्योंकि साहित्य की कोई सीमा नहीं होती है। भारतीय रुपये में इस पुरस्कार की कीमत 52.95 लाख होती है। मुश्ताक पहली कन्नड़ लेखिका हैं, जिन्हें बुकर पुरस्कार 2025 के लिए चुना गया। यह अनुवादक दीपा भस्थी के लिए भी गर्व का विषय है।

अब तक छह पूर्व भारतीय लेखकों को उनकी कृति के लिए अंतर्राष्ट्रीय बुकर पुरस्कार मिल चुका है, जिसमें वीएस नायपॉल, सलमान राश्दी, अरुंधती राय, किरण देसाई, अरविंद अडिगा और गीतांजली श्री को हिंदी उपन्यास के लिए 2022 में यह पुरस्कार मिला था, जबकि सबसे पहले 1971 में नायपॉल को मिला था। बुकर की होड़ में पांच किताबें शामिल थीं, जिसमें सोलेज की ऑन द कलकुलेशन ऑफ वैल्यूज, स्मॉल बोट की विसेंट डेलिक्रोइस्क, हीरोमी कावाकामी की अंडर द आई ऑफ द बिग बर्ड, डिसेंजो लैट्रिनिको की परफेक्शन और ऐरी सेरे की ए लैपर्ड स्किन हैट शामिल थीं। ऐसी स्थित में कन्नड़ से अंग्रेजी में अनुदित हॉर्ट लैंप को बुकर मिलना गर्व की बात है।

कविताएं

पहलगाम का प्रतिशोध

जो भी कवि-धर्म निभाते हैं,
वे कविजन मन को भाते हैं।

जो निर्भय होकर रचें छंद,
अनवरत शब्द-संधान करें,
सह कष्ट स्वयं, जो लोक-हेतु
शंकर जैसे विषपान करें।

जिनकी कविता के पाठ-पूर्व
कंपन श्रोतागण भांप सकें,
जिनके शर-शब्द अनय-वध को
जग का हर कोना माप सकें।

जिनकी रचना के शब्द-शब्द
भय का आतंक मिटाते हैं।
वे कविजन मन को भाते हैं।।

जिनकी कृति बनकर ज्योतिपुंज,
अंतस का अंधकार मेटे,
पावन कर दे जो लोकदृष्टि,
जग सादर बार-बार भेंटे।

जिनके शब्दों के भाव-मेह,
धरती को स्वर्ग बनाते हैं।
वे कविजन मन को भाते हैं।।

घनश्याम अवस्थी
गोण्डा

आग और पानी की चिंता

अत : समस्याओं के घर में
लगभग अब सबका निवास है।

सुविधाओं की बढ़ी मांग से
हैं घिस रही आर्थिक ईंटें,
जैसे अधिक लोग होने से
हुई बुलावे में कम सीटें,
अब अभाव की आमदनी से
भरा हुआ
खाली गिलास है।

कोई डगर नहीं जाती है
केवल
एक पक्ष की ओर।
नईं कोपलें भी टहनी में
रहीं बनाती हैं दो छोर।
और एकता की शर्तों पर
बंटवारा
करता प्रयास है।

आग और पानी की चिंता
में पकती है
एक गृहस्थी,
महंगाई के विश्वयुद्ध में
मर जाती हैं
चीजें सस्ती,
संभावना जानवर बनकर
चरती रहती
हरी घास है।

विवेक कुमार
गीतकार

संभल जाओ पाक वालों, न अपने मन में भ्रम पालो

बने हुए फिरते हो सिंह पर, तुम
हो पक्के स्यार।
एक निवेदन तुमसे करता,
सुनलो ऐ सरकार।
पाक संग अब चले युद्ध और बंद
करो व्यापार।
दोनों साथ नहीं चल सकते, युद्ध
और व्यापार।।
अब तो लेना पड़ेगा निर्णय, होगा
आर या पार।
दोनों साथ नहीं चल सकते, युद्ध
और व्यापार।।
गीदड़ भभकी देते रहे तुम, करते
रहे मानव संहार।
ऐसी शांति भला किस अर्थ की,
छुप-छुपकर करते तुम वार।
दोनों साथ नहीं चल सकते, युद्ध
और व्यापार।
टूट गया जल का समझौता,
पाक हुआ बेकार।
दोनों साथ नहीं चल सकते, युद्ध
और व्यापार।।
चीनी चाल को समझ लो बेटा,
वरना कबर करो तैयार।
दोनों साथ नहीं चल सकते युद्ध
और व्यापार।।
लिए कटोरा फिरो विश्व में,
मर्यादा कर तार।
कितनी बार भिड़े रणभूमि में,
मिली सदा ही हार।
दोनों साथ नहीं चल सकते, युद्ध
और व्यापार।।

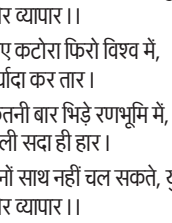

दया शंकर मिश्र
लेखक

कहानी

शोले

टीवी पर आए दिन हो रही बहस को लेकर प्रोफेसर रुद्राक्ष बहुत आहत नजर आ रहे थे। कॉलेज के स्टॉफरूम में अपने अभिन्न मित्र प्रोफेसर त्रिलोकनाथ से उन्होंने कहा- "आज भी, अपने ही पैरों में कुल्हाड़ी मारने से लोग बाज नहीं आ रहे। अपने ही धर्म, अपनी ही संस्कृति और अपने ही सरोकारों का नाश करने पर तुले हुए हैं। बरसों की गुलामी के बाद भी इन्हें कुछ समझ क्यों नहीं आ रहा, यह सोचने का विषय है।"

त्रिलोकनाथ बोले-"ऐसे लोग पहले भी थे, तभी तो देश गुलाम हुआ। ये लोग न देश के न धर्म के। उन दिनों, शैतान नंगा नाच रहा था। अपनी शैतानगी पर रीझ रहा था। धर्म परिवर्तन और कुकर्म रोज की कहानी थी। ऐसे उस परिवेश में जो बीज डाला गया, यह उसी का परिणाम है। खून तो अपना रंग दिखाएगा ही। इसमें अलग से कुछ सोचने की बात क्या है?" त्रिलोकनाथ की आंखों में क्रोध छलक आया था। अर्थात अपने धर्म और अपनी संस्कृति के विरुद्ध जहर उगलने वाले ये जाहिल इन्हीं शैतानों का बीज हैं। अच्छा, तभी तो हर ठौर उन्हीं के पक्ष में उठ खड़े होते हैं? बात आगे बढ़ी।

डॉ सुरेश वशिष्ठ
वरिष्ठ लेखक

"हां, इनकी आंखें अंधी हैं और कान बहरे। इन्हें कितना भी समझाओ, वो नहीं समझेंगे। गलत को जायज बनाने की पुरजोर यह कोशिश चलती ही रहेंगी। शैतानों को समर्थन प्राप्त होता रहेगा और उनकी शक्ति बढ़ती जाएगी।" आंखें अंगार-सी सुलगती दिखाई देने लगी।

"इन्हें इंसानों की मौतें नहीं दिखती। प्रहार नहीं दिखता। मरते हुए आदमी की चीखें सुनाई नहीं देती। गर्दन रेतने में रक्त का बहता सैलाब नहीं दिखाई पड़ता।" प्रोफेसर साहब की आवाज तीव्र होती चली गई। क्रोध सीमा लांघने लगा।

त्रिलोकनाथ आहत हुए और कहने लगे- "उन्हें किसी के मरने या मारने से कहीं कुछ फर्क नहीं पड़ता। ये दूसरों की मौत पर खुश होने वाले लोग हैं। सच को झूठ साबित करने के लिए चाहे कितना भी नीचे गिर सकते हैं। इनका जमीर मर चुका है। आदमी की शक्ल में ये लोग रंगे सियार हैं। अपने धर्म, अपनी संस्कृति को मिटा देने पर आमादा हैं।" "फिर तो, ऐसे जहरीले नागों का फन कुचल डालना इंसानों का प्रथम कार्य होना चाहिए।" प्रोफेसर रुद्राक्ष की भवें टेढ़ी होने लगीं और गुस्सा बढ़ने लगा। "इन लोगों का इलाज तो यही है, लेकिन इंसान बुजदिल और डरपोक होने लगा है। इसके लिए

सरकार और फौजों को सचेत रहने की जरूरत है। ऐसा करना संभव नहीं हुआ, तब क्या होगा, यह सोचो।" त्रिलोकनाथ बोले।

"तब तो हमें अपनी संस्कृति और अपना धर्म छोड़ने के लिए तैयार रहना चाहिए।"

"नहीं, हम अपना धर्म, अपनी रीत क्यों छोड़ें? यह हमारा देश है। हमारे धर्म का देश है। कफन बांधकर मिटने के लिए उठ खड़ा हो जाऊंगा, लेकिन धर्म नहीं छोड़ूगा।" भुजाएं फड़क उठी। आंखों से शोले निकलने लगे। तभी कॉलेज परिसर में शोरगुल हुआ। किसी ने बताया कि दो मनचले कॉलेज की एक लड़की के साथ शैतानी कर रहे हैं। उसे अपने साथ निकाह के लिए मजबूर कर रहे हैं। बात मनवाने के लिए दवाब डाल रहे हैं।

प्रोफेसर त्रिलोकनाथ उठे। साथ में रुद्राक्ष भी उठा। दोनों वहां पहुंचे, जहां शैतान, लड़की को निकाह के लिए डराया-धमकाया जा रहा था। उन्होंने दोनों शैतानों को पकड़ लिया। समझाने की कोशिशें हुई, लेकिन शैतान जिरह करने लगे। तब क्रोधित उन्माद में दोनों ने उन्हें पकड़ा और काबू में कर उनका टैंटवा दबा दिया। प्राण देह से रुखसत हो गए। क्रोध की अगन से शोले बरसने लगे थे।

प्रोफेसर्स के पक्ष में हुजूम बनने लगा। लोग दहाड़ने लगे। चहूं ओर भारत माता की जय की आवाजें गूंजने लगी। भीड़ इकट्ठी हुई और काफिले बनते गए। लोगों ने देखा-शैतानों की दुमें टांगों से चिपक गई थी।

लघुकथा

जीवन प्रमाण

सरकारी सेवा से रिटायर्ड मोहनलाल गौशाला में पाली जाने वाली बेसहारा गायों की दुर्दशा के समाचार अखबार में पढ़ते रहते हैं। इन गायों को पालने के लिए धनराशि सरकार भेजती है, जिससे इनके भूसा-चारा का इंतजाम किया जाता है। अब अगर संचालक यह राशि गायों पर पूरा खर्च कर देगा तो उसे क्या बचेगा? निरीक्षण करने वाले अधिकारी का हिस्सा भी बनता ही है, लेकिन गायों को जिंदा बनाए रखना जरूरी है वरना पैसा नहीं आएगा। इसलिए उन्हें कुछ सूखी घास, पुआल इत्यादि डाल दिया जाता है।

अतुल मिश्र
डिप्टी मैनेजर (इफको) बरेली

आज वह पूरा अखबार समाप्त नहीं कर पाए थे कि बेटा कुलदीप उन्हें जल्दी से तैयार हो जाने को बोला। वह आज उन्हें लेकर राजकीय कोषागार में उनके जीवित होने का प्रमाण देने जाने वाला है। वर्ष में एक बार सभी सरकारी पेंशन प्राप्तकर्ता को यह औपचारिकता करनी पड़ती है। समय से प्रमाण न देने पर पेंशन रुक जाती है। कुलदीप और उसकी पत्नी इस कार्य को बखूबी करते हैं। पिताजी को कोषागार ले जाने में कभी देर नहीं करते। उन्होंने पिता की चेकबुक पर उनके हस्ताक्षर पहले से ही ले रखें हैं, जिससे पेंशन की राशि अपनी इच्छा से निकाल सके।

बेटे की मां बात सुन मोहनलाल जी ने सोचा "आज जरूर बेटा लौटते समय डॉक्टर टंडन के क्लीनिक ले जाएगा"। उनके पेट में महीनों से दर्द की समस्या बनी हुई थी। कभी कम तो कभी ज्यादा दर्द रोज ही उठता था, परंतु कुलदीप और नीरा पर इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। आज फिर उन्हें कोषागार से वापस घर ले आया गया। लौटकर अपने कमरे के एकांत में मोहनलाल अखबार में छपे अधमरी गायों का चित्र देखते हुए हींग का चूर्ण फांक रहे हैं।

किस्सा

बड़ा बनने की चाह

रेनू प्रतिदिन बच्चे को छोड़ने कन्वीनिएंट विद्यालय जाती थी, जहां उसकी हर तरह के लोगों से मुलाकात भी होती। कोई बड़ी-बड़ी गाड़ियां लेकर तो कोई मीलों पैदल चलकर भी आता। रेनू इन चीजों को बहुत ध्यान से देखती और समझती। ऐसे तो वो बातें हर किसी से करती, लेकिन धन-धान्य से संपन्न लोगों से बातें कर वह कुछ अलग ही आनंद महसूस करती। उनकी संपन्नता का राज जानने की कोशिश करती। उसके अंदर भी यह चाह जगती, "काश मेरी जिंदगी भी इन चीजों से भरी हुई होती तो कितना अच्छा होता।" इन चीजों को लेकर उसके पति से अक्सर तकरार भी हो जाती थी।

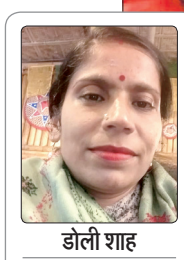

डोली शाह
लेखिका

एक दिन रेनू बस से सफर करते हुए एक इंसान (राजन) से मिली, जो पल भर में ही तारीफों के पुल बांधते हुए निजी जीवन की बातें भी पूछने लगा। रेनू भी उसकी बातों से प्रभावित हो गई। उसने उसकी मनः स्थिति को समझते हुए चौंका-बर्तन कर एक मोटी रकम का झांसा देकर अपने घर आने का कहा। रेनू की धनवान बनने की चाह मानो कुछ भी करने की उत्सुक थी। उसने कुछ और जानकारी लेना भी जरूरी न समझा और अगले दिन से ही आने की हामी भर दी। रेणु मन ही मन बहुत प्रसन्न थी। मना करने के डर से उसने पति को भी इस मामले में बताना जरूरी न समझा। अगले दिन बताए पते पर रेनू उसके घर गई। वहां जाकर घर के कामों के बाद राजन पैर दर्द की शिकायत बताते हुए दबाने का निवेदन किए। रेनू ने थोड़ा दबा दिया और वहां से चली गई। अगले दिन और हर दिन एक नई अंग की दर्द की शिकायत करते। न चाहते हुए भी रेनू करने के लिए बाध्य

रहती। आज तो उन्होंने पीठ दर्द की शिकायत कर दी। रेनू तो वह भी कर रही थी। इसी दौरान किसी काम के सिलसिले में उनसे दो लोग मिलने आए और रेनू को उस अवस्था में देख, व्यंग्य करते हुए कहा, "वाह राजन जी, क्या बात है आपकी तो अंधेरे में भी चमक है।" तब तक एक फोटो खींच लिया। रेनू ने गिड़गिड़ाते हुए बोला-"साहब मेरी फोटो अभी ही डिलीट कर दीजिए, प्लीज! मैं तो बड़े बनने की चाह मैं सब कुछ कर रही हूं और कुछ नहीं। महंगे कपड़े, आरामदायक सामान खरीदने के लिए मेरी इच्छा, जो आज तक पूरी न हो सकी बस उसी के लिए प्रयास कर रही हूं।" "तो इस रास्ते से! क्या करोगी इन महंगी कपड़े और साधनों का! तन ढकने के लिए कपड़ों के मूल्य का क्या महत्व? यदि मैं यह फोटो किसी को भी दिखा दूं, तो तुम्हारी क्या इज्जत रह जाएगी? कम से कम पैसों के लिए अपने इंसानियत को मत बेचो।" यह सब सुन वह बोली-माफ कीजिएगा साहब हो सके, तो आज तक की मेरी मजदूरी दे दीजिए। वह अपनी मजदूरी ले वहां से अपनी छोटी सी दुनिया में चली गई।

समीक्षा

संगीत-कला के शोध से नि:सृत नवनीत

साहित्य, संगीत और कला आत्मदर्शन के विषय हैं। इन तीनों ही विधाओं में व्यक्ति स्वयं के मन में झांककर विचारों के दधि को, कल्पना की मथानी से मथकर, सृजनात्मकता के नवनीत को प्राप्त करता है। आत्मा का विषय होने के चलते सच्चा साहित्य, संगीत अथवा कला दैवीय सिद्धि का प्रतिबिंब होता है। इसमें ईश्वर की पूर्णता की छाया के दर्शन होते हैं। डॉ. श्रीकांत मिश्र और डॉ. कविता भटनागर के संपादन में सद्यः प्रकाशित पुस्तक 'वाङ्मय में संगीत एवं कला', साहित्य, संगीत और कला के विभिन्न क्षेत्रों और आयामों पर किए गए शोधों के सार तत्व संग्रह के रूप में है। 21 विशिष्ट शोध पत्रों को समेटे इस पुस्तक को दो भागों में वर्गीकृत कर प्रकाशित किया गया है। पहले भाग में साहित्य, संगीत और कला के क्षेत्र के शोध आलेख समाहित हैं, जबकि दूसरे भाग में अपना शोध कार्य पूर्ण कर चुके विद्वानों के शोध ग्रंथों में स्थापित की गई मान्यताओं को स्थान दिया गया है। संगीत के क्षेत्र से भारतीय शास्त्रीय व उपशास्त्रीय संगीत के प्रतिभावान व्यक्तित्व अमीर खुसरो के संगीत में योगदान पर महत्वपूर्ण शोध आलेख सम्मिलित है। सभी शोध आलेखों में संदर्भ भी दिए गए हैं। कुल मिलाकर एक महत्वपूर्ण संदर्भ ग्रंथ के रूप में यह पुस्तक पाठकों के हाथों में पहुंच रही है, जो कि एक संग्रहणीय पुस्तक है।

पुस्तक- वांग्मय में संगीत एवं कला
संपादक- डॉ श्रीकांत मिश्र एवं डॉ कविता भटनागर
प्रकाशक- अखण्ड पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
मूल्य- 500 रु.
समीक्षक- डॉ प्रशांत अग्निहोत्री

व्यंग्य

गड्ढों का अस्तित्व न मिटाएं ये लाइफलाइन हैं

सड़क के गड्ढे, इनके अस्तित्व में आने का कोई स्पेसिफिक कारण नहीं है। पहले गड्ढे वे हैं, जो किसी निर्माण कार्य के चलते खोदने पड़ते हैं, जबकि दूसरी किस्म के गड्ढे घटिया निर्माण सामग्री के कारण, जहां चाहे, जब चाहे अनचाहे शिशु की माफिक जन्म ले लेते हैं। बेशक, जनता को गड्ढों से दिक्कत होती है, लेकिन गड्ढों के अपने कुछ फायदे भी हैं। इस महत्वपूर्ण तथ्य का अनावरण उस समय हुआ जब हम अपने एक मित्र संग शहर के हालात पर चर्चा में मशगूल थे। हमने कहा-"शहर में कैसी व्यवस्था है? हर तरफ गड्ढे ही गड्ढे, जिस सड़क पर नजर घुमाइए, खाइयां ही नजर आती हैं। गढ़ रोड से लेकर दिल्ली रोड, मवाना रोड सब जगह बुरा हाल है। शहर के अंदरूनी हिस्सों में तो हालात ज्यादा ही खराब हैं। राहगीरों की चकरघिन्नी बनी है। गड्ढे वाली सड़क को छोड़ लोग दूसरा रास्ता लेते हैं, लेकिन अगले दिन वहां भी गड्ढे 'वेलकम' करते नजर आते हैं।" मित्र ने कान्फिडेंस के साथ कहा, "ये सब जनता के वेलफेयर की सरकारी व्यवस्था है। सर्च अप्रोच्ड जिंदगी-जनता का वेलफेयर?" हमारी आश्चर्यजनक भृकुटियां तनती देख मित्र बोले-"देखिए तमाम शहरी ऐसे हैं, जो पूरी जिंदगी गिनी-चुनी सड़कों पर चप्पलें घिसते गुजार देते हैं। दरअसल उन्हें कभी सड़क बदलने की ही जरूरत महसूस नहीं हुई, इसलिए हमेशा कूपमंडूक बने रहते हैं। सीमित दृष्टिकोण और बाहरी दुनिया से अनजान। चूंकि, आवश्यकता आविष्कार की जननी है, इसलिए इस व्यवस्था में ऐसे लोग मजबूरीवश वैकल्पिक रास्तों पर नजर दौड़ाएंगे। एक-दूसरे से इस बारे में डिस्कस करेंगे। 'कृपया ध्यान दें' जैसी खबरों के लिए अखबारों को खंगालेंगे। इससे उनका दिमाग चलेगा सोचने का दायरा बहुमुखी होगा। नतीजा, वे घिसा-पिटा पैटर्न छोड़ सर्च अप्रोच्ड जिंदगी जीने लगेंगे।" खराब सड़क से बढ़ती आई साइट- गड्ढों के कारण वाहन चलाते समय आपको सड़क पर चील की तरह निगाह गड़ाकर इसलिए रखनी पड़ेगी कि अचानक कहीं गड्ढा न आ जाए। इससे आंखों की नियमित व स्वाभाविक कसरत होगी। यह कसरत करने से आई साइट भी वीक नहीं होगी। आप हर रोज गड्ढों के जरिए अपनी आई साइट जांचते रहेंगे। इससे बड़ा फायदा ये होगा कि जिंदगीभर आप्टीशियन के पास जाने की जरूरत नहीं और चश्मे का भी झंझट खत्म।

राजनीति में आने के चांस- अगर आप रोजाना नई-नई सड़कों का चयन करेंगे तो नए रास्तों के साथ आमजन की समस्याओं से भी अपडेट रहेंगे। लोकतंत्र में राजनीति की सीढ़ी आमजन के कंधों पर पैर रखकर बनाई जाती है। ऐसा करके आपको सियासत की 'स्वर्ग सीढ़ी' ढूंढने में ज्यादा मशक्कत नहीं करनी पड़ेगी। भले ही शुरू में सभासद या पार्षद का चुनाव लड़ें, लेकिन लगातार रास्ते बदल-बदलकर चलेंगे तो नए-नए दुखी लोग और नए-नए दुख सड़कों पर पसरे दिख जाएंगे। इन दुखियारों को आप सांत्वना देने लगेंगे, क्योंकि आम आदमी के पास सांत्वना के सिवा देने को और है भी क्या? इस सतत अभ्यास से जनता का दुख देख रुआंसा चेहरा बनाने, वादे करने और कसमें खाने की कला सीखकर विधानसभा और लोकसभा में भी एंट्री ले सकते हैं। टलेगा हादसों का खतरा-शहर में जगह-जगह स्पीड लिमिट के बोर्ड लगे हैं। इसके बावजूद हमारे नौजवान चिकनी सड़कें देख बेतहाशा वाहन दौड़ाते हैं। एक्सीडेंटल जोन में भी यही हाल रहता है। सड़कों पर गड्ढे होंगे तो वे 20 की स्पीड से अधिक वाहन चला ही नहीं सकेंगे। इससे हादसे भी रुकेंगे और नौजवानों को बेवजह चालान भी नहीं भुगतने पड़ेंगे। ट्रैफिक पुलिस को भी आराम मिलेगा और स्थानीय प्रशासन का स्पीड लिमिट बोर्ड लगवाने का खर्च भी बचेगा।

याद रहेगा गड्ढों का गणित- गणित और गड्ढों का साथ खीर में चिरौंजी जैसा है। मसलन, गणित में गड्ढे की लंबाई-चौड़ाई बताकर क्षेत्रफल निकालने के प्रश्न अक्सर पूछे जाते हैं। सिविल इंजीनियरिंग की तो नींव ही मिट्टी पर रखी जाती है। स्पेसिफिक आकार के गड्ढे में कितनी मिट्टी हो सकती है, गड्ढे वाले स्थानों पर निर्माण में क्या सावधानी बरतें आदि-आदि। सोचिए यदि गड्ढे ही समाप्त हो जाएंगे तो भावी पीढ़ी और इंजीनियरों को गड्ढों का प्रेक्टिकल ज्ञान कैसे रह पाएगा, इसलिए गड्ढों का अस्तित्व

हर सूरत-ए-हाल बचाना जरूरी है। इससे महान भारतीय गणितज्ञ श्रीनिवास रामानुजन जी को भी प्रसनता होगी कि भावी पीढ़ी गड्ढों के जरिए उनके सूत्रों को कितनी लगन से आत्मसात कर रही है। सामाजिक सरोकार-गड्ढों के सामाजिक सरोकार भी हैं। करियर पर ध्यान नहीं देने वाले बच्चों को घर के बड़े-बुजुर्ग अक्सर हिदायत की घुट्टी देते रहते हैं कि, पढ़ाई पर ध्यान नहीं दिया तो जिंदगी गड्ढे में चली जाएगी। जिंदगी के हालात इस जुमले के साथ बयान किए जाते हैं-आगे पहाड़, पीछे खाई। ऐसे में अगर गड्ढे अस्तित्वविहीन हो गए तो न ये जुमले ज़िंदा रह पाएंगे, न इनका वाचन करने वाले, सोचा ही कभी? बच्चे भूल ही जाएंगे गड्ढों से जुड़ी गणितीय कैलकुलेशन। मित्र दे दनादन सडकों के फायदे बताए जा रहे थे और मैं इस सोच के इस समंदर में हिचकोले ले रहा था कि गड्ढे खत्म हो गए तो अखबार में हेडिंगों का भी अकाल पड़ सकता है। गड्ढों में सड़क या सड़कों में गड्ढे, हत्या कर शव गड्ढे में दबाया, दो पक्षों में खुदी दुश्मनी की खाई, बस खाई में पलटी...सात की मौत, 36 घायल, सड़ा-गला शव गड्ढे से बरामद, रेत माफिया ने गंगा में बनाए मौत के गड्ढे। विषम हालात में इस पत्रकारीय नुकसान को देखते हुए मैं गड्ढों का प्रबल पैरोकार हूं और गड्ढों का अस्तित्व हरसंभव बचाए रखने की शपथ लेता हूं। गड्ढों के लिए लड़ता रहूंगा, लिखता रहूंगा, भले ही मुझे गड्ढे में गिरना पड़े। बोलिये मेरे साथ, गड्ढों की जय... गड्ढे अजर रहे, गड्ढे अमर रहें।

-योगेश प्रताप चौहान, व्यंग्यकार

आयुर्वेद की अद्भुत शल्य तकनीक: क्षारसूत्र चिकित्सा

डॉ. मानसी
बीएएमएस, एमएस. (जनरल सर्जरी) कंसल्टेंट एवं असिस्टेंट प्रोफेसर,शल्यतंत्र विभाग, रोहिलखंड आयुर्वेदिक मेडिकल कालेज एवं चिकित्सालय बरेली।

भारत की प्राचीनतम चिकित्सा प्रणाली आयुर्वेद में अनेक प्रकार के रोगों का वर्णन और उनका उपचार उपलब्ध है। यह चिकित्सा पद्धति केवल शरीर नहीं, बल्कि मन, आत्मा और पर्यावरण के संतुलन पर आधारित है। आयुर्वेद की विशेषता यह है कि इसमें रोगों के उपचार के साथ-साथ उनकी पुनरावृत्ति को भी रोका जाता है। इसी पद्धति में एक अत्यंत उपयोगी चिकित्सा विधि है-क्षारसूत्र चिकित्सा। यह विधि विशेष रूप से भगंदर (फिस्टुला), अर्श (पाइल्स), नाड़ी रोग (साइनस) तथा अन्य गुदा संबंधी रोगों के लिए अत्यंत प्रभावशाली मानी जाती है। इस चिकित्सा पद्धति का उल्लेख महर्षि सुश्रुत द्वारा रचित सुश्रुत संहिता में मिलता है, जो आयुर्वेद का प्रमुख शल्य ग्रंथ है। वर्तमान समय में भी यह विधि अत्यधिक प्रभावशाली सिद्ध हो रही है और इसे आयुर्वेदिक सर्जरी का स्तंभ माना जाता है।

क्षार सूत्र एक विशेष प्रकार का औषधीय लेपित धागा होता है, जिसे रोगग्रस्त भाग, जैसे भगंदर की नली में डालकर उपचार किया जाता है। यह धागा धीरे-धीरे नली को गलाता है, उसमें संक्रमण को समाप्त करता है और स्वस्थ ऊतक के निर्माण में सहायता करता है। इसमें मुख्य रूप से क्षरण, शोधन और रोपण की तीन क्रियाएं एक साथ होती हैं। क्षारसूत्र का निर्माण एक वैज्ञानिक और औषधीय प्रक्रिया द्वारा किया जाता है। इसमें सामान्यतः लिनन या सिल्क का धागा प्रयोग में लाया जाता है, जिसे पहले गोमूत्र में भिगोया जाता है। इसके बाद 11 बार अपामार्ग क्षार, 7 बार हरितकी कषाय और 3 बार हल्दी चूर्ण का लेप कर धूप में सुखाया जाता है। यह लेपन और सुखाने की प्रक्रिया एक-एक परत करके की जाती है, जिससे धागा पूरी तरह औषधीय गुणों से युक्त हो जाता है। अंतिम रूप में इसे स्टेराइल कंटेनर में रखकर उपयोग के लिए सुरक्षित किया जाता है।

क्षारसूत्र चिकित्सा की प्रक्रिया में पहले रोग की पहचान की जाती है। फिर रोगी को स्थानीय संज्ञा हरण (लोकल ऐनेस्थैटिक) दिया जाता है और क्षारसूत्र को रोगग्रस्त भाग, जैसे भगंदर की नली में, सावधानीपूर्वक डाला जाता है। उसके दोनों सिरों को बाहर बांध दिया जाता है। यह सूत्र धीरे-धीरे अंदरूनी सड़े हुए मांस को गलाता है और साथ ही नए ऊतक को उगने का अवसर देता है। सूत्र को प्रत्येक सात दिन पर या चिकित्सक के निर्देशानुसार बदलना होता है। उपचार की कुल अवधि रोग की स्थिति और नली की लंबाई पर निर्भर करती है, जो सामान्यतः 4 से 8 सप्ताह तक हो सकती है।

चिकित्सा के लाभ

क्षारसूत्र चिकित्सा के अनेक लाभ हैं। यह विधि अत्यधिक प्रभावी मानी जाती है और इससे उपचार किए गए रोगियों में रोग की पुनरावृत्ति की संभावना लगभग नहीं के बराबर होती है। आधुनिक सर्जरी के मुकाबले यह एक सुरक्षित और कम खर्चीला विकल्प है। क्षारसूत्र की क्षारीयता रोगग्रस्त ऊतक को गला देती है, जबकि हल्दी और हरितकी संक्रमण को रोकती है और घाव को भरने में सहायता करती हैं। चूंकि इस प्रक्रिया में शल्यक्रिया जैसी चीरफाड़ नहीं होती, इसलिए रोगी को अधिक आराम मिलता है और वह सामान्य दिनचर्या का पालन भी कर सकता है।

आयुर्वेद पद्धति की वैज्ञानिकता की स्वीकार्यता

इस विधि का उपयोग विशेष रूप से भगंदर (फिस्टुला), नाड़ी रोग (साइनस), अर्श विकारों में किया जाता है। आधुनिक चिकित्सा विज्ञान भी अब इस आयुर्वेदिक पद्धति की वैज्ञानिकता को स्वीकार कर रहा है। आईसीएमआर और एआईआईएमएस जैसे संस्थानों में इस तकनीक पर कई शोध हो चुके हैं, जिनमें पाया गया है कि क्षार सूत्र उपचार सुरक्षित, प्रभावशाली और पुनरावृत्ति रहित होता है। इस विधि को अब इंटीग्रेटिव मेडिसिन के अंतर्गत आधुनिक चिकित्सा के साथ जोड़ा जा रहा है। क्षार सूत्र चिकित्सा न केवल पुरुषों के लिए, बल्कि महिलाओं के लिए भी एक सुरक्षित, प्रभावशाली और प्राकृतिक शल्य चिकित्सा विकल्प के रूप में उभर कर सामने आई है। विशेष रूप से वे महिलाएं जो गुदा रोगों जैसे अर्श (बवासीर) या भगंदर (फिस्टुला) से पीड़ित होती हैं, उनके लिए यह विधि अत्यंत लाभकारी सिद्ध होती है। गर्भावस्था, प्रसव और हार्मोनल असंतुलन के कारण महिलाओं में इन रोगों की संभावना अधिक होती है और क्षारसूत्र चिकित्सा उन्हें बिना किसी चीरफाड़ के स्थायी राहत प्रदान करती है। यह विधि प्रसव के बाद होने वाली जटिलताओं जैसे पेरिनियल एब्सेस या नाड़ी रोग (साइनस) में भी कारगर सिद्ध होती है। इसके माध्यम से बिना बड़े ऑपरेशन के धीरे-धीरे रोगग्रस्त ऊतक गलते हैं और नए स्वस्थ ऊतक का निर्माण होता है, जिससे संक्रमण का जोखिम भी नहीं रहता।

चिकित्सा की विशेषताएं

क्षारसूत्र चिकित्सा की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें प्रयोग होने वाली औषधियां जैसे अपामार्ग क्षार, हल्दी, हरितकी आदि पूर्णतः प्राकृतिक होती हैं, जो महिला शरीर पर कोई हार्मोनल प्रभाव नहीं डालतीं। इसके कारण यह विधि गर्भावस्था के बाद या प्रजनन आयु की महिलाओं के लिए भी पूरी तरह सुरक्षित मानी जाती है। पारंपरिक सर्जरी के विपरीत, इसमें किसी प्रकार की चीरफाड़ या टांके नहीं होते, इस विधि की एक और महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि यह प्रजनन अंगों को प्रभावित नहीं करती। गुदा क्षेत्र में कार्य होने के कारण प्रजनन क्षमता पर कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ता और महिलाएं भविष्य में गर्भधारण भी कर सकती हैं। कुल मिलाकर क्षारसूत्र चिकित्सा महिलाओं के लिए एक आधुनिक सर्जरी का प्राकृतिक, सुरक्षित और प्रभावी विकल्प है, जो न केवल रोग का समाधान देती है, बल्कि उनके शरीर के प्राकृतिक संतुलन को भी बनाए रखती है। हालांकि यह विधि अत्यंत लाभकारी है, फिर भी इसमें कुछ सावधानियां आवश्यक हैं। यह चिकित्सा केवल प्रशिक्षित और अनुभवी वैद्य या आयुर्वेदिक सर्जन की देखरेख में ही की जानी चाहिए। सूत्र को समय पर बदलना आवश्यक है अन्यथा ट्रैक्ट अधूरा गल सकता है या सूख सकता है। उपचार के दौरान रोगी को विशेष आहार-विहार का पालन करना होता है, जैसे हल्का सुपाच्य भोजन, त्रिफला चूर्ण, इसबगोल आदि का सेवन और गुदा क्षेत्र की सफाई का विशेष ध्यान। रोगी को अधिक समय तक बैठने से बचना चाहिए और चिकित्सक द्वारा बताए गए सभी निर्देशों का पालन करना चाहिए। इस समग्र प्रक्रिया को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि क्षारसूत्र चिकित्सा आयुर्वेद की एक अनुपम देन है, जो न केवल रोग का जड़ से समाधान देती है, बल्कि रोग की पुनरावृत्ति को भी रोकती है। यह तकनीक आधुनिक चिकित्सा की जटिल और महंगी सर्जिकल प्रक्रियाओं के एक सशक्त विकल्प के रूप में स्थापित हो चुकी है। आज जब स्वास्थ्य सेवाएं दिन-प्रतिदिन महंगी और जटिल होती जा रही हैं, तब क्षारसूत्र चिकित्सा एक सरल, सुलभ और प्रभावी समाधान प्रस्तुत करती है। क्षारसूत्र चिकित्सा वात-कफ विकारों, जैसे पुराने नाड़ी रोग, साइनस में अत्यंत उपयोगी सिद्ध होती है। यह नाड़ी मार्गों को शुद्ध कर संचित दोषों का शमन करती है। सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इस विधि से रोग की पुनरावृत्ति की संभावना अत्यंत कम होती है। भगंदर जैसे रोग, जो आधुनिक सर्जरी के बाद भी बार-बार होते हैं, वे क्षार सूत्र विधि से पूरी तरह समाप्त किए जा सकते हैं। यह पूरी तरह से आयुर्वेदिक, जैविक और शरीर के अनुकूल विधि है, जिसमें किसी भी प्रकार का रासायनिक हस्तक्षेप नहीं होता। इसके अलावा, यह प्रक्रिया स्थानीय रूप से की जाती है, जिससे अन्य अंगों या प्रणालियों पर कोई दुष्प्रभाव नहीं पड़ता।

विधि की उपयोगिता

इस विधि की उपयोगिता उन रोगियों के लिए विशेष रूप से अधिक होती है, जो बार-बार सर्जरी नहीं करवा सकते, जिनके शरीर में संक्रमण का डर रहता है या जिन्हें आधुनिक चिकित्सा से राहत नहीं मिली है। महिलाओं, वृद्धों और ऑपरेशन से डरने वाले रोगियों के लिए यह एक अत्यंत सुरक्षित और प्रभावी विकल्प है। संक्षेप में कहें तो, क्षारसूत्र विधि आयुर्वेद की वह चिकित्सा प्रणाली है, जो रोग को जड़ से समाप्त करती है, शरीर की प्राकृतिक संतुलन शक्ति को बनाए रखती है और रोगी को संपूर्ण स्वास्थ्य की ओर अग्रसर करती है।

भगंदर व अर्श का स्थायी समाधान

रोहिलखंड आयुर्वेदिक मेडिकल कॉलेज एवं चिकित्सालय बरेली में क्षारसूत्र चिकित्सा की सुविधा अनुभवी चिकित्सकों द्वारा उपलब्ध कराई जाती है। यहां पर भगंदर, अर्श, नासूर, एवं अन्य गुदा रोगों के लिए आधुनिक जांच विधियां, स्टरलाइज्ड उपकरण और पूर्ण चिकित्सा सुविधा मौजूद है।

फिल्म जगत

रोमांस और कॉमेडी का तड़का

'भूल चूक माफ' एक ऐसी फिल्म है, जो अपनी अनोखी टाइम-लूप अवधारणा और बनारस के छोटे शहर के माहौल से दर्शकों को लुभाने की कोशिश करती है। निर्देशक करण शर्मा ने एक दिलचस्प प्लॉट चुना है और फिल्म एक रोमांटिक कॉमेडी के रूप में शुरू होती है, लेकिन धीरे-धीरे बेरोजगारी, सामाजिक जिम्मेदारियों और आत्मचेतना जैसे विषयों पर भी रोशनी डालती है। फिल्म की सबसे बड़ी ताकत राजकुमार राव का अभिनय है। वह रंजन के किरदार में पूरी तरह से ढल जाते हैं और एक चुलबुले, खींचे हुए, उत्साहित और परेशान लड़के के हर इमोशन को बखूबी पर्दे पर उतारते हैं। उनकी टाइमिंग और सहजता लाजवाब है। वामिका गब्बी भी तितली के चंचल और थोड़ी पगलैट किरदार में अच्छी लगती हैं और स्क्रीन पर उनकी केमिस्ट्री राजकुमार राव के साथ अच्छी है। सहायक कलाकारों में संजय मिश्रा, रघुवीर यादव, सीमा पाहवा और जाकिर हुसैन जैसे अनुभवी कलाकार शामिल हैं, जो फिल्म को और भी मजेदार बनाते हैं। उनकी कॉमिक टाइमिंग और सहज अभिनय फिल्म के हल्के-फुल्के माहौल में चार चांद लगा देते हैं।

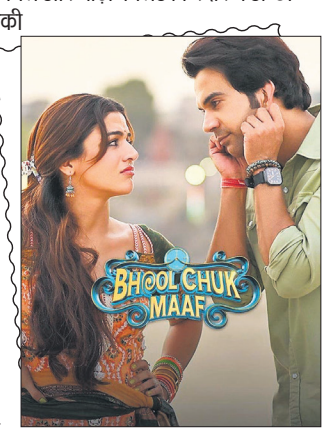

फिल्म की कहानी, जैसा कि ट्रेलर में भी दिखाया गया था, टाइम लूप पर आधारित है, जो बॉलीवुड में बहुत कम फिल्मों में देखने को मिलती है। यह हॉलीवुड क्लासिक 'ग्राउंडहॉग डे' (1993) से प्रेरित लगती है। फिल्म का पहला भाग कहानी और किरदारों को स्थापित करने में थोड़ा समय लेता है और यह कुछ हद तक खींचा हुआ महसूस हो सकता है। हालांकि दूसरा भाग तेजी से आगे बढ़ता है और कहानी में एक नया मोड़ आता है, जो इसे केवल एक रोमांटिक कॉमेडी से कहीं अधिक बनाता है। कुछ आलोचकों का मानना है कि फिल्म टाइम लूप की अवधारणा को पूरी तरह से भुना नहीं पाती और कहीं-कहीं दोहराव महसूस होता है। कुछ जगह पर हास्य भी थोड़ा पुराना या घिसा-पिटा लग सकता है, जैसे गर्भावस्था के मजाक या प्रेम की पुरानी अवधारणाएं। सुदीप चटर्जी की सिनेमेटोग्राफी बनारस के दृश्यों को खूबसूरती से कैद करती है। संगीत की बात करें तो तनिष्क बागची ने गाने दिए हैं और केतन सोढ़ा ने बैकग्राउंड स्कोर दिया है। "कोई ना" जैसे गाने कर्णप्रिय हैं। 'भूल चूक माफ' एक अच्छी कोशिश है, जो एक अनोखे विषय को लेकर आती है। राजकुमार राव का अभिनय फिल्म को देखने लायक बनाता है। अगर आप टाइम लूप वाली कॉमेडी और हल्के-फुल्के मनोरंजन की तलाश में हैं, तो यह फिल्म आपको पसंद आ सकती है। हालांकि अगर आप एक कसा हुआ और पूरी तरह से नया अनुभव चाहते हैं, तो शायद यह थोड़ी निराश कर सकती है। यह एक ऐसी फिल्म है, जो अपने उज्ज्वल क्षणों के लिए देखी जा सकती है, भले ही यह अपनी पूरी क्षमता तक न पहुंच पाए।

समीक्षक-आदिल फरीदी

खाना खजाना

मैंगो फालूदा

अंकिता जोशी
फूड ब्लॉगर

मैंगो फालूदा एक ठंडा, परतदार डेजर्ट ड्रिंक है, जो गर्मियों के लिए एकदम सही है। इसे फालूदा सेव (पतली सेंवई), भिगोए हुए तुलसी के बीज (सब्जा), आम की प्यूरी, मीठा दूध, कटे हुए आम, आइसक्रीम का एक स्कूप और कुरकुरे नट्स के छिड़काव से बनाया जाता है। ऐसा लगता है कि आपने कुछ फैंसी बनाया है, लेकिन इसे बनाना वास्तव में बहुत आसान है। आइए आपको बताते हैं इसको बनाने की रेसिपी।

सामग्री

- 2 पके आम (छिलके और कटे हुए या गूदे में पिसे हुए)
- 2 बड़े चम्मच फालूदा सेव (सेंवई)
- डेढ़ कप ठंडा दूध
- 2 बड़े चम्मच चीनी (वैकल्पिक, आम की मिठास के आधार पर)
- 1 बड़ा चम्मच सब्जा के बीज (तुलसी के बीज)
- 2 स्कूप वेनिला आइसक्रीम
- 2 बड़े चम्मच टूटी फ्रूटी
- केसर के कुछ रेशे
- मैंगो जेली क्यूब्स (वैकल्पिक)
- कटे हुए आम के टुकड़े (परतें लगाने और सजाने के लिए)

बनाने की विधि

सबसे पहले सब्जा के बीज भिगोएं। 1 बड़ा चम्मच सब्जा के बीज को 10-15 मिनट के लिए पानी में भिगोएं। फिर वे फूल जाएंगे और जिलेटिनस हो जाएंगे, तो उसका पानी निकाल कर अलग रख दें। फिर फालूदा सेव पकाएं इसके लिए दो कप पानी उबालें। फालूदा सेव डालें और नरम होने तक 3-5 मिनट तक पकाएं। पानी निकालकर ठंडे पानी से धो लें। अलग रख दें।

आम का बेस तैयार करें- आम को दो बड़े चम्मच चीनी के साथ मिलाकर चिकना गूदा बना लें। बचे हुए आम को छोटे-छोटे टुकड़ों में काट लें।

फालूदा की परतें लगाएं- एक लंबा गिलास लें और इस क्रम में परतें लगाएं:

1 बड़ा चम्मच भिगोए हुए सब्जा के बीज, 1 बड़ा चम्मच पका हुआ फालूदा सेव, 2-3 बड़े चम्मच आम का गूदा, कुछ आम जेली के टुकड़े (वैकल्पिक), कुछ कटे हुए आम, गिलास के वें हिस्से तक ठंडा दूध डालें, 1 स्कूप वेनिला आइसक्रीम डालें, टूटी फ्रूटी, केसर के रेशे और आम के और टुकड़ों से सजाएं और तुरंत परोसें।

गत वर्षों की तरह इस वर्ष भी लोगों में चार धाम यात्रा को लेकर उत्साह है। उत्तराखंड की चारधाम यात्रा बहुत पुण्य फलदाई मानी जाती है। मान्यता है कि हर सनातनी को अपने जीवन में कम से कम एक बार तो चारधाम यात्रा पर जरूर जाना चाहिए।

विशेष रिपोर्ट- अमित शर्मा

कैसे शुरू करें चारधाम यात्रा

केदारनाथ

दिल्ली से हरिद्वार या ऋषिकेश पहुंचने के बाद सीधे यात्री बस या टैक्सी से रुद्रप्रयाग या सोनप्रयाग तक पहुंचा जा सकता है। यहां से गौरीकुंड तक का सफर प्रशासन की ओर से हायर की गई टैक्सी-मैक्सी सेवा से किया जा सकता है। गौरीकुंड से केदारनाथ की करीब 16 किमी की पैदल यात्रा शुरू होती है, जो लोग हेली सेवा से यात्रा करना चाहते हैं, वे ऑनलाइन टिकट बुक कर गुप्तकाशी, फाटा और शेरसी हेलीपैड से केदारनाथ की यात्रा पर जा सकते हैं। इन तीनों स्थानों से आठ कंपनियों की हेली सेवाएं उपलब्ध हैं।

बदरीनाथ

बदरीनाथ धाम तक किसी भी वाहन से पहुंच सकते हैं। दिल्ली से हरिद्वार और ऋषिकेश पहुंचने के बाद रुद्रप्रयाग, कर्णप्रयाग और गोपेश्वर होकर बदरीनाथ पहुंचा जा सकता है।

गंगोत्री और यमुनोत्री

गंगोत्री और यमुनोत्री धाम के लिए दिल्ली से बस या ट्रेन से सीधे देहरादून या ऋषिकेश पहुंचा जा सकता है। यहां से गंगोत्री की यात्रा उत्तरकाशी से हर्षिल होकर अपने निजी वाहन या टैक्सी से तय की जा सकती है, जबकि यमुनोत्री के लिए बड़कोट होकर जानकीचट्टी पहुंचना होता है। जानकीचट्टी से यमुनोत्री की करीब छह किमी की पैदल यात्रा तय करनी होती है।

चारधाम यात्रा फिर रफ्तार पकड़ गई है। दर्शन के लिए श्रद्धालुओं का तांता लगा है। केदारनाथ धाम में हर रोज 24 हजार से अधिक तीर्थयात्री पहुंच रहे हैं। कुल संख्या की बात करें तो गुरुवार 22 मई तक केदारनाथ में दर्शनार्थियों का आंकड़ा 4.77 लाख के पार पहुंच गया है, जबकि चारों धामों में कुल 12 लाख 20 हजार 664 श्रद्धालु दर्शन कर चुके हैं। बता दें कि विगत 30 अप्रैल को गंगोत्री एवं यमुनोत्री धाम के कपाट खुलने के साथ ही चारधाम यात्रा का आगाज हो गया था। इसके बाद दो मई को केदारनाथ और चार मई को बदरीनाथ धाम के कपाट आम श्रद्धालुओं के दर्शनार्थ खोल दिए गए थे। सरकार के बेहतर यात्रा प्रबंधन के चलते यात्रा दिनोंदिन जोर पकड़ रही है।

रूटों पर सभी जरूरी इंतजाम

प्रदेश सरकार ने सुरक्षित और सुविधाजनक यात्रा के लिए सभी जरूरी इंतजाम किए हैं। स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार किया गया है। केदारनाथ यात्रियों के लिए पैदल मार्ग में गौरीकुंड से केदारनाथ तक 13 मेडिकल केंद्र खोले गए हैं, जहां जीवनरक्षक दवाईयों के साथ ही प्रशिक्षित स्टाफ की तैनाती है। इसके अलावा सोनप्रयाग, गौरीकुंड और केदारनाथ में अस्पताल खोला गया है। केदारनाथ में स्थायी अस्पताल बनाया गया है, जहां एक्सरे मशीन लगाई गई है। जरूरी स्टाफ की भी तैनाती है।

यात्रा मार्ग में मिल रहा गरम पानी

केदारनाथ यात्रा मार्ग में श्रद्धालुओं के लिए पांच स्थानों पर गरम पानी व्यवस्था की गई है। उत्तराखंड जल संस्थान ने हॉट वाटर सिस्टम लगाया है। यात्रियों की मांग को देखते हुए यह व्यवस्था की गई है।

जाम से निजात

बीते वर्ष चारों धामों में भारी भीड़ उमड़ने से यात्रा मार्गों पर बार-बार जाम की समस्या समाने आई थी। इस बार किसी भी यात्रा रूट पर लगने वाले जाम से निजात पाने की योजना पहले ही तैयार कर ली गई। भीड़ प्रबंधन के साथ ही ट्रैफिक कंट्रोल का भी फूलप्रूफ प्लान तैयार किया गया है। गढ़वाल रेंज कार्यालय में बनाए गए चार धाम यात्रा कंट्रोल रूम से यात्रा रूट पर ट्रैफिक नियंत्रण, पार्किंग और सुरक्षा व्यवस्था को लेकर समन्वय का काम किया जा रहा है।

पार्किंग की पुख्ता व्यवस्था

यात्रा रूटों और पड़ावों में इस बार पार्किंग की पुख्ता व्यवस्था की गई है। देहरादून में 28, हरिद्वार में 17, पौड़ी में 13, रुद्रप्रयाग में 18, चमोली में 31, टिहरी गढ़वाल में 23 और उत्तरकाशी में चार अस्थायी पार्किंग स्थल बनाए गए हैं। ये पार्किंग स्थान मुख्य रूप से यात्रा मार्ग और मुख्य शहरों में स्थित हैं, जिससे यात्रियों को अपने वाहनों को सुरक्षित रूप से पार्क करने में मदद मिलती है।

निर्बाध रूप से चल रही है चारधाम यात्रा

उत्तराखंड मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी का कहना है कि प्रदेश में चारधाम यात्रा निर्बाध रूप से चल रही है। श्रद्धालुओं की सुरक्षा एवं यातायात प्रबंधन के पुख्ता इंतजाम किए गए हैं। मौसम को देखते हुए विशेष निगरानी तंत्र विकसित किया गया है। यात्रा से जुड़े उत्तरकाशी, चमोली, रुद्रप्रयाग, टिहरी और पौड़ी के आपदा प्रबंधन विभाग को सतर्क रहने के निर्देश दिए गए हैं। जिला प्रशासन से बारिश, भूस्खलन या किसी भी प्रकार की आपदा की स्थिति में तीर्थयात्रियों को सुरक्षित स्थानों पर ठहराने, उनके रहने और खाने की पुख्ता व्यवस्था और सुरक्षा के इंतजाम करने को कहा गया है। केदारनाथ में दर्शनार्थियों की बढ़ती संख्या को देखते हुए व्यापक इंतजाम किए गए हैं।

साप्ताहिक राशिफल

-पं. मनोज कुमार द्विवेदी
ज्योतिषाचार्य, कानपुर

मेष
इस सप्ताह आप पाएंगे कि परिस्थितियों में बड़ा बदलाव आ रहा है। सप्ताह की शुरुआत बड़े खर्चों से होगी। इस दौरान अचानक से कुछ चीजों पर अपनी जेब से ज्यादा खर्च करना पड़ सकता है। आय के मुकाबले खर्च की अधिकता रहने के कारण आपका बजट गड़बड़ा सकता है।

वृष
इस सप्ताह नियम-कानून की अवहेलना करने से बचना चाहिए अन्यथा आर्थिक कष्ट के साथ अपमान भी झेलना पड़ सकता है। कामकाज के सिलसिले में अधिक भागदौड़ करनी पड़ सकती है। व्यर्थ की यात्रा एवं भागदौड़ के कारण मन खिन्न रहेगा।

मिथुन
इस सप्ताह आपका अधिकांश समय स्वजनों के साथ हंसी-खुशी मौज-मस्ती करते हुए बीतेगा। लंबे समय बाद किसी आत्मीय व्यक्ति से मेल-मुलाकात हो सकती है। इस दौरान अचानक से किसी इष्ट-मित्रों अथवा परिवार के सदस्यों के साथ पिकनिक पर्यटन का प्रोग्राम बन सकता है।

कर्क
इस सप्ताह अपनी पूरी उर्जा और उत्साह के साथ अपने कार्यों को अंजाम देते हुए नजर आएंगे। खास बात ये कि आपके द्वारा कार्य विशेष के लिए की गई मेहनत और प्रयास का सकारात्मक फल भी मिलेगा। व्यवसाय से जुड़े लोगों की कारोबारी दिक्कतें दूर होंगी।

सिंह
यह सप्ताह सफलता के नए द्वार खोलने वाला साबित होगा। यदि आप लंबे समय से किसी कार्य विशेष के सफल होने का इंतजार कर रहे थे, तो इस सप्ताह किसी प्रभावी व्यक्ति की मदद से उससे जुड़ी बाधाएं दूर होंगी और वह मनमुताबिक तरीके से संपन्न हो जाएगा। दैनिक आय में वृद्धि होने से आपकी धन से जुड़ी चिंता काफी हद तक दूर हो जाएगी।

कन्या
इस सप्ताह सोचे हुए कार्यों को करते समय अनचाही समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। सप्ताह की शुरुआत में आपको छोटी-छोटी चीजों के लिए अधिक परिश्रम व प्रयास करना पड़ेगा। इस दौरान आपको अपनी ऊर्जा, समय और धन का विशेष रूप से प्रबंधन करके चलना उचित रहेगा।

तुला
यह सप्ताह थोड़ा उठापटक लिए रहने वाला है। जीवन से जुड़े तमाम क्षेत्रों में दिक्कतों के बावजूद अंततः चीजें आपके पक्ष में बन जाएंगी। इस सप्ताह नौकरीपेशा लोगों पर कामकाज का अतिरिक्त दबाव बना रहेगा। किसी दूसरे की गलती का खामियाजा आपको भुगतना पड़ सकता है।

वृश्चिक
यह सप्ताह मिश्रित फलदायी रहने वाला है। इस पूरे सप्ताह आपको कोई भी बड़ा फैसला असमंजस की स्थिति में लेने से बचना चाहिए अन्यथा बड़ा आर्थिक नुकसान झेलना पड़ सकता है। नौकरीपेशा लोगों को कार्यक्षेत्र में वरिष्ठ एवं कनिष्ठ दोनों को ही मिलाकर चलना उचित रहेगा।

धनु
इस सप्ताह कुछ चीजों को पाने के लिए कुछ चीजों से समझौता करना पड़ सकता है। यदि आपका कोई मामला कोर्ट-कचहरी में चल रहा है और उसे बातचीत के जरिए हल निकलने का अवसर मिले तो उसे हाथ से बिल्कुल भी न जानें दे। नौकरीपेशा लोगों को इस सप्ताह अपनी भावनाओं के अनुरूप कार्य करने में थोड़ी परेशानी हो सकती है।

मकर
यह सप्ताह शुभता लिए हुए है। यदि आप व्यवसाय से जुड़े हैं, तो आपको बाजार में काफी उतार-चढ़ाव देखने को मिल सकता है। सप्ताह कभी खुशी कभी गम लिए रहने वाला है। आपको कई बार ऐसा लगेगा कि आपका आर्थिक लाभ उतनी तेजी से नहीं बढ़ रहा है, जितनी तेजी से आपका धन खर्च हो रहा है।

कुंभ
इस सप्ताह आपके सभी सोचे हुए कार्य समय पर मनचाहे तरीके से पूरे होते हुए नजर आएंगे। सप्ताह की शुरुआत में आपको करियर-कारोबार से जुड़ी बहुप्रतीक्षित सूचना प्राप्त होगी। यदि आप व्यवसाय से जुड़े हैं, तो आपका कारोबार तेज गति से आगे बढ़ेगा और उसमें आपको मनचाहा लाभ होगा।

मीन
इस सप्ताह कामकाज में थोड़ी बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है। सोचे हुए कार्यों में अड़चनें आने से आपका मन खिन्न रहेगा। इस दौरान आपको स्वजनों से अपेक्षित सुख और सहयोग में कमी देखने को मिलेगी। सप्ताह की शुरुआत में आपको कामकाज के सिलसिले में लंबी दूरी की यात्रा करनी पड़ सकती है।

वर्ग पहेली (काकुरो)

काकुरो पहेली वर्ग पहेली के समान हैं, लेकिन अक्षरों के बजाय बोर्ड अंकों (1 से 9 तक) से भरा है। निर्दिष्ट संख्याओं के योग के लिए बोर्ड के वर्गों को इन अंकों से भरना होगा। आपको दी गई राशि प्राप्त करने के लिए एक ही अंक का एक से अधिक बार उपयोग करने की अनुमति नहीं है। प्रत्येक काकुरो पहेली का एक अनूठा समाधान है।

काकुरो 11

			14	13	23
		13 14			
	24 23				
8			13 5		
14					
20					

काकुरो 10 का हल

			13	14	
	7	17 20	9	8	8
19	1	9	4	3	2
9	2	7	3 11	2	1
22	4	3	9	1	5
	3	1	2		

जोक्स ऑफ द डे

पत्नी- सुनो जी ये मोबाइल बिल्कुल काम नहीं कर रहा है दूसरा ले लूं क्या?
पति- काम तो तुम भी बिल्कुल नहीं करती क्या मैंने नई पत्नी की डिमांड की?

पापा, मिंटू से- बेटा तेरा इतिहास का पेपर कैसा रहा?
मिंटू- पापा बिल्कुल बेकार गया।
पापा- क्यों बेटा?
मिंटू- पापा मास्टर ने मेरे जन्म से पहले का भी प्रश्न पूछ दिया था।

बाजीराव मस्तानी के वंशज और बांदा के नवाब

बुंदेलखंड में मराठा सत्ता का उदय एवं अस्त की कहानी रोचक और हृदयस्पर्शी है। सन् 1729 में महाराज छत्रसाल को बाजीराव पेशवा द्वारा समय पर की गई सैन्य सहायता के परिणामस्वरूप बंगश परास्त हुआ। बंगश की पराजय के पश्चात बाजीराव के प्रति कृतज्ञता स्वरूप महाराज छत्रसाल ने बुंदेलखंड का एक भाग बाजीराव को सौंप दिया। साथ ही अपनी मुगलानी पत्नी से उत्पन्न पुत्री मस्तानी भी उनको सौंप दी। इस प्रकार आरंभ हुई बाजीराव मस्तानी की प्रणय गाथा सन् 1740 ई. में बाजीराव एवं मस्तानी की मृत्यु के साथ समाप्त हो गई। परंतु बाजीराव एवं मस्तानी के पुत्र शमशेर बहादुर और पौत्र अली बहादुर ने मराठा एवं बुंदेलखंड के इतिहास को प्रभावित किया। बाजीराव मस्तानी की मृत्यु के समय उनका एकमात्र पुत्र शमशेर बहादुर छह वर्ष का था। उसका लालन-पालन पुणे के शनिवार बाड़ा के मस्तानी महल में बाजीराव के पुत्र के रूप में सम्मान के साथ हुआ।

रूपेश उपाध्याय
अपर-कलेक्टर, सागर

वयस्क होने पर उसका विवाह लक्षधीर दलपत राम की पुत्री लाल कुंवर से हुआ। लाल कुंवर की मृत्युपरांत शमशेर बहादुर का दूसरा विवाह मेहर बाई से हुआ। सन् 1758 में उसके पुत्र अली बहादुर का जन्म हुआ। उत्तर में मराठाओं के अभियान में शमशेर बहादुर साथ रहा।

बुंदेलखंड में छत्रसाल की मृत्युपरांत उनके पुत्रों में हुए विवादों के निराकरण का दायित्व भी पेशवा ने शमशेर बहादुर को ही सौंपा। बाजीराव का पुत्र होने से छत्रसाल वंशज शमशेर बहादुर से भाईचारा मानते थे। पानीपत के तृतीय युद्ध सन् 1761 में शमशेर बहादुर मराठा सेना के दाएं पक्ष में यशवंत राव पंवार, जनकोजी सिंधिया, तथा मल्हार राव होल्कर के साथ था। शमशेर बहादुर ने शौर्य, पराक्रम प्रदर्शित करते हुए युद्ध बहादुरी से लड़ा और घायल हो गया। बाद में भरतपुर में ही उसकी मृत्यु हो गई। मृत्यु के समय उसकी उम्र 27 वर्ष ही थी। अपने कृतित्व से उसने स्वयं को श्रेष्ठ मराठा सिद्ध किया।

शमशेर बहादुर की मृत्यु के समय उसके पुत्र अलीबहादुर युवा होते ही मराठाओं के युद्ध अभियानों में भेजा जाने लगा। सन् 1787 में लालसौट के युद्ध मे महादजी के सहयोग हेतु भेजा गया। सन् 1788 ई. में गुलाम कादिर को बंदी कर उसने नाना फणनीस की प्रशंसा प्राप्त की। गुलाम कादिर और उसके संबंधियों के दमन के पश्चात महादजी सिंधिया ने अली बहादुर को गौसगढ़, अलीगढ़, सराहनपुर की रुहेलाओं की जागीरों का शासन सौंप दिया। हिम्मत बहादुर गुसाईं के कारण महादजी सिंधिया एवं अली बहादुर के बीच परस्पर विरोध और अविश्वास की रेखा खींच दी। हिम्मत बहादुर गुसाईं के साथ मिलकर बुंदेलखंड में उसने बड़ी सेना तैयार कर ली। दतिया के राजा शत्रुजित और सिमथर के राजा देवीसिंह

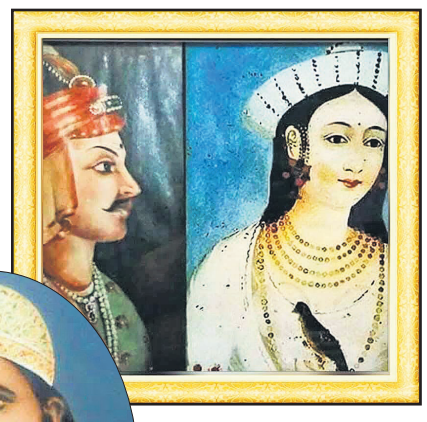

से वसूली की और अपने साथ मिला लिया। अलीबहादुर हिम्मत गुसाईं ने धसान नदी पार कर बांदा जैतपुर के इलाके में बुंदेलखंड के डंगाई क्षेत्र में आ पहुंचा। बांदा के नौने अर्जुनसिंह पर चढ़ाई कर दी। नौने अर्जुनसिंह मारा गया। अजयगढ़ के दुर्ग पर अली बहादुर का अधिकार हो गया। उसने स्वयं को बांदा राज्य का नवाब घोषित कर दिया।

सन् 1793 ई. में हिम्मत बहादुर गुसाईं ने चरखारी के राजा विजय बहादुर और विजावर के राजा वीर सिंह को छत्तरपुर के राजा सोने शाह पवार को पराजित किया। मार्च 1793 ई. में पन्ना का राजा धौकल सिंह एवं जैतपुर के राजा गजसिंह को भी परास्त कर दिया। इस प्रकार धसान नदी से पन्ना तक के राज्य, अजयगढ़, चरखारी, जैतपुर, विजावर, छत्तरपुर आदि सभी अली बहादुर के बांदा राज्य के अधीन आ गए।

महादजी सिंधिया एवं नाना फडनीस की मृत्यु के बाद अली बहादुर की बुंदेलखंड की कार्यवाहियों पर कोई अंकुश नहीं रहा। अपने वंशगत शासन स्थापित करने की उसकी महत्वाकांक्षा बढ़ती ही गई। वह हिम्मत बहादुर गुसाई की महत्वाकांक्षा के चंगुल में वह फंसता गया। बुंदेलखंड में भी उसका विरोध बढ़ता गया। तब उसने इन राजाओं को उनके राज्यों की सनद देकर पटाना चाहा, पर वह इन राजाओं का विश्वास खो बैठा था। इसी बीच उसने दो बार रीवा राज्य पर भी आक्रमण किया और रुपये वसूल कर संधि कर ली। कालिंजर के किलेदार रामकिशन चौबे ने संधि का प्रयास किया, विफल होने पर सन् 1800 ई. में कालिंजर दुर्ग का घेरा डाल दिया। कालिंजर किले की दुर्भेद्यता और रामकिशन चौबे के साहसपूर्वक मोर्चा लेने से अली बहादुर एवं हिम्मत बहादुर गोसाईं के सम्मिलित प्रयत्न विफल हुए। कालिंजर का घेरा दो वर्ष तक चलता रहा। इसी घेरे के दौरान अली बहादुर अचानक बीमार हो गया और 28 अगस्त सन् 1802 ई. को उसकी मृत्यु हो गई। इस समय उसकी उम्र 43 वर्ष की थी।

उसे 29 वर्ष की आयु में सन् 1787 ई. में पूना से महादजी की सहायता के लिए रवाना किया गया था। छत्रसाल के वंशजों की फूट और निर्बलता का लाभ उठा कर हिम्मत गुसाईं के सहयोग से उसने धसान से रीवा तक का क्षेत्र विजित कर बांदा का नवाब बन बैठा। उसने विघटित बुंदेलखंड के राज्यों को विजित कर उसने बांदा में नावाबी राज्य की स्थापना तो कर ली, पर पराजित राजाओं के सम्मिलित सशस्त्र विरोध के कारण वह व्यवस्थित शासन स्थापित नहीं कर सका। बुंदेलखंड में उसके दस वर्ष लड़ते- भिड़ते ही बीते और उसका अंत भी कालिंजर किले के घेरे में हुआ। अली बहादुर के सैनिक अभियानों ने बुंदेलखंड की राजनैतिक और आर्थिक स्थित बहुत ही अनिश्चित तथा अराजकतापूर्ण कर दी, जिससे उसके मरते ही अंग्रेजी सत्ता के पैर बुंदेलखंड में जमना शुरू हो गए। एक दशक भी न गुजरने पाया था कि बुंदेलखंड के सभी राजे रजबाड़े अंग्रेजों की छत्र छाया में आ गए।

इतिहास के झरोखे से

पंचाल राज्य का गौरवशाली इतिहास

प्रो. गिरिराज नन्दन
इतिहासकार, आंवला, बरेली

बदायूं (इतिहास, पुरातत्व एवं संस्कृति)

बदायूं रुहेलखंड मंडल के दक्षिण-पश्चिम में पूर्वी देशांतर रेखाओं के बीच गंगा एवं रामगंगा के दोआब के मध्य में स्थित है। इसके उत्तर में रामपुर-बरेली एक मुरादाबाद जिले हैं। दक्षिण-पश्चिम में गंगा नदी सीमा बनाती है तथा फर्रुखाबाद, एटा, अलीगढ़ एवं बुलन्दशहर जिलों से इसे पृथक करती है। जिले की पूर्व से पश्चिम तक लम्बाई 114 कि.मी. तथा उत्तर से दक्षिण तक चौड़ाई 60 कि.मी. है। यह समुद्र तल से 500 फुट की औसत ऊंचाई पर स्थित है। इसमें प्रमुख नदियां गंगा एवं रामगंगा हैं तथा सहायक नदियां महावा, सोत/भैसोर, अरिल तथा सोत हैं। इसका क्षेत्रफल 5168 वर्ग किलोमीटर है। यहां बदायूं, दातागंज, बिसौली, सहसवान, गुन्नौर तथा बिल्सी छः तहसीलें हैं। इस जनपद में रजपुरा, गुन्नौर, जूनावई, आसफपुर, बिसौली, वजीरगंज, दहगवां, सहसवान, अम्बियापुर, सालारपुर इस्लामनगर, बिसौली, बजीस्मंन, दहगवां, अम्बियापुर, सालास्पुर, जगत, उझानी, कादरचौक समरेर, दातागंज, म्याऊं एवं उसावां, 18 विकास खण्ड हैं। बदायूं भी सन् 1801 में अग्रेजों के अधिकार में आया। प्रारंभ में यह क्षेत्र बरेली में सम्मिलित रहा। सन 1823 में सहसवान को मुख्यालय बनाकर यहां जिला बना। बाद में सन 1838 में बदायूं जिला बनाया गया।

नामकरण

प्राचीन नगर बदायूं के बारे में कई मत हैं। कुछ विद्वानों का विचार है कि इसको सन 905 में अहीर राजा बुद्ध ने बसाया था। उस समय यह बुद्धमऊ कहलाता था इसके बाद राजा महिपाल के मंत्री सूरजध्वज ने वेदों के अध्ययन के लिए यहां पर केन्द्र स्थापित किया तब यह वेदामऊ पुकारा गया। ग्यारहवीं शताब्दी के एक लेख के अनुसार इसका नाम वेदामयूता था लेकिन जब मोहम्मद गौरी के सेनापति कुतुबउदीन ऐवक ने यहां अधिकार किया तब यहां का नाम बदाऊं था। तव से यहां का नाम साधारण बोलचाल में बदाऊं ही बोला जाता है लेकिन लिखा पढ़ी में बदायूं प्रयुक्त होता है। यह रुहेलखण्ड का ऐतिहासिक महत्वपूर्ण स्थान हैं। भारत में तुर्की राज्य स्थापित होने के साथ ही बदायूं का महत्व बहुत बढ़ गया। बदायूं को सुवा मुख्यालय बनने का गौरव प्राप्त हुआ। यहां दिल्ली के बादशाह का प्रतिनिधि रहता था। बदायूं को यह गौरव भी प्राप्त है कि दिल्ली के अधिकतर सुल्तान, बादशाह बनने से पूर्व यहां के सूबेदार रहे थे। उनके काल में इस्लाम धर्म के उत्थान की दृष्टि से यह विशेष महत्वपूर्ण रहा तथा तब से सदैव धार्मिक केन्द्र रहा एवं अब भी है।

प्राचीनकाल

सर्वप्रथम यहां का उल्लेख तब मिलता है जब यहां के बुद्ध नामक राजा ने बौद्ध धर्म स्वीकार किया। उसी के नाम के आधार पर इसका नाम बुद्धमऊ पड़ा। ऐसी जनश्रुति भी प्रचलित है कि कांवर के राजा वेन का राज्य बदायूं तक था उसने वर्तमान बिनावर जो बदायूं बरेली मार्ग पर स्थित है में एक कोट (किला) वनबाया था जिसका नाम वेन आवर (कोट) रखा था। यही बेन आवर अपभ्रंश होकर बिनावर कहलाता है। प्राचीन काल में बदायूं का क्षेत्र पंचाल राज्य का अंग था। कन्नौज राज्य के उत्थान के बाद यह क्षेत्र उस राज्य का हिस्सा बन गया। ऐसा उल्लेख मिलता है कि राजा हर्षवर्धन के समय जब यहां बौद्ध धर्म का प्रचार किया गया तब यहां के भद्रा स्वामी तथा भद्रपाल रुद्र ने यह स्थान वेदों की शिक्षा के लिए सुरक्षित करा लिया जिसके कारण इसको बेदामऊ कहा गया।

कोट सालवाहन की स्थापना

आगे के समय में उज्जैन के राजा विक्रमादित्य का भी यहां पर राज्य रहा तथा बाद में सालवाहन उपनाम समुद्र पाल जोगी ने इस क्षेत्र पर अधिकार कर लिया। इस राजा ने कोट तहसील सहसवान में किला बनवाया जो कोट सहसवान कहलाया। जब सालवाहन ने दिल्ली (इंद्रप्रस्थ) पर अधिकार कर लिया तब बदायूं अपने पुत्र चंद्रपाल को सौंप दिया।

हमवीर : अथवा हमभीर का प्रयोग सल्तनकाल में कुछ सिक्कों में भी खुदा हुआ पाया गया है जो नागरी में 'अमीर' के समतुल्य है। इस शिलालेख में शैव संत ईशान शिव का भी वर्णन किया गया है, जो लखनपाल के काल में था, जिसने वोदामयूता (बदायूं) में शिव मन्दिर बनवाया था। संतों के तीन उत्तराधिकारियों का इसमें वर्णन है जो कि इस प्रकार है। वरुण शिव, मूर्तिगन, ईशान शिव यह शिलालेख लखनऊ संग्रहालय में रखा हुआ है। इस का सर्वप्रथम प्रकाशन ऐपीग्राफिका इंडिया वाल्यूम प्रथम, 1892 पृष्ठ 6-66 पर किया गया है। इन राजाओं के समय में एक विशाल किले का निर्माण कराया गया। वर्तमान बदायूं अधिकतर उसी के खंडहरों पर बसा हुआ है।

महिपाल प्रथम

इसके पश्चात यहां के बारे में ऐसा उल्लेख प्राप्त होता है कि सौराष्ट्र के राजा का पुत्र महिपाल यहां पर वेदों की शिक्षा प्राप्त कर रहा था। उसकी योग्यता को देखते हुए यहां के विद्वत समाज ने लोगों के परामर्श से उसको यहां का राजा बनाया जो बाद में इंद्रप्रस्थ का राजा भी बना। उसकी राजधानी मुख्य रूप से अहिच्छत्र (किला-रामनगर तहसील आंवला जिला बरेली) नगर था। ऐसा कहा जाता है कि राजा जब बदायूं आता था तब यहां रत्न महल में ठहरा करता था (यह रत्न महल जो गली सोता मोहल्ले के भण्डार कुएं के उत्तर-पूर्व की तरफ है उसके स्थान पर था) राजा की रानियों का महल मोहल्ला खेल के स्थान पर था। राजा यहां भंडारा किया करता था उसकी यादगार सोता मोहल्ला का भंडार कुआं अब भी आबाद है। राजा महिपाल ने बाद में यहां का राज्य अपने बेटे अनंग पाल को दे दिया। यह तोमर वंशी राजपूत थे। बदायूं पर इनके वंशजों का लगभग दो सौ वर्षों तक राज्य रहा। इसी काल में सूरजकुंड एवं सागर ताल का निर्माण बदायूं में हुआ।

बूढ़ी नदी पुल: इंजीनियरिंग का चमत्कार

जब योगीराज श्रीकृष्ण कंस वध के पश्चात मथुरा के राजा हुए, उस कालखंड में आधुनिक फरीदाबाद के सराय मेट्रो स्टेशन और एनएचपीसी मेट्रो स्टेशन के बीच सोम बाजार के पास (एसएसएम पब्लिक स्कूल से थोड़ी दूरी पर), बूढ़ी नदी पर एक पुल का निर्माण हुआ था, जो आज भी यथारूप विद्यमान है, जहां आज के सीमेंट और कंक्रीट की बनी हुई संरचनाएं सौ वर्षों से पूर्व ही दम तोड़ देती हैं। अंग्रेजों के समय के सीमेंट और कंक्रीट की रचनाएं कहीं-कहीं आज तक अर्थात् दो सौ वर्षों तक अस्तित्व में है, किंतु उन संरचनाओं को आज सुरक्षित नहीं माना जाता है, उनके विकल्प में दूसरी संरचना निर्माण हो चुके हैं या हो भी रहे हैं। वहीं, द्वापर में श्रीकृष्ण के मथुरा का राजा होने के समय का अर्थात आज से कम से कम 6 हजार वर्ष पूर्व की संरचना का आज भी यथावत होना, उसका यातायात के लिए आज भी सुरक्षित उपयोग होना। आधुनिक काल की इंजीनियरिंग के लिए एक शोध व आश्चर्य का विषय है। आधुनिक परिप्रेक्ष्य में यह एक आश्चर्यजनक संरचना है।

मुरारी शरण शुक्ल
लेखक

भारत की थाती के हिसाब से यह आश्चर्य का विषय नहीं है, क्योंकि भारतीय वास्तुकला में तो ऐसी संरचनाएं सहज ही निर्मित होती रही हैं। भारतीय वास्तु ग्रंथों में तो ऐसी संरचनाओं के निर्माण की विधि, उसमें उपयोग होने वाली सामग्रियों और सेमेंटिंग मटेरियल्स का विस्तृत विवरण उपलब्ध है। यहां विषय भिन्न होने से अधिक विस्तार में न जाते हुए, राजा भोज रचित और समरांगण सूत्रधार और रावण के श्वसुर दानव शिल्पी मयासुर द्वारा रचित मयमतम् नामक ग्रंथों का उल्लेख अवश्य करना चाहूंगा, जिनका अध्ययन रुचि रखने वाले लोग कर सकते हैं। समरांगण सूत्रधार को उत्तर भारत में अधिक प्रसिद्धि है, तो मयमतम को दक्षिण भारत में।

विदित हो कि इस पुल में उपयोग किया गया सेमेंटिंग मटेरियल आधुनिक सीमेंट नहीं है, बल्कि इसमें गन्ने के रस को उबालते समय निकलने वाला झाग, जिसे छाई भी कहते हैं, जिसे आजकल एथेनॉल का स्रोत भी माना जाता है। गुड़, चुना, मोरम (सुरखी), बेल के फल का गुदा और उड़द की दाल इत्यादि मिलाकर बनाया जाता था। इस सेमेंटिंग मटेरियल से बनी हुई संरचना में गर्मी के दिनों में ठंडा और ठंडे के दिनों में गर्मी का अनुभव होता है। ये भवन या संरचना स्वतः वातानुकूलित होते हैं।

इस पुल के निर्माण में लोहे की छड़ (सरिया) का उपयोग भी नहीं हुआ है। पत्थरों का चुनाव भी वैज्ञानिक रीति से किया गया है, ऐसे पत्थरों का चुनाव किया गया है, जिनकी आयु हजारों वर्ष की है। श्रीराम जन्मभूमि पर अयोध्या में मंदिर निर्माण की प्रक्रिया जब आरंभ हो रही थी, तब उन दिनों श्रीराम जन्मभूमि तीर्थक्षेत्र न्यास के महासचिव चंपत राय एक बात बार-बार कह रहे थे कि भगवान का मंदिर निर्माण के लिए ऐसे पत्थरों का चुनाव किया जाएगा, जिनकी आयु हजार वर्ष से अधिक हो। श्रीकृष्ण ने स्वयं भी इस पुल के निर्माण में ऐसे पत्थरों का चुनाव किया/करवाया, जिनकी आयु हजार वर्षों से अधिक हो, बल्कि 6 हजार वर्षों से अधिक की थी। इस पुल के दोनों तरफ सब्जी बाजार जितने क्षेत्र में लग जाता है, उतनी भूमि का क्षेत्र चहारदीवारी देकर सुरक्षित किया गया है, जिसमें कुछ रथ खड़े किए जा सकें। इसको वैदिक संदर्भ में गोचर्म कहा जाता था अर्थात इतना स्थान, जितने में एक सौ गाएं, अपने बछड़ों और सांडों के साथ स्वछंद रूप से निवास कर सकें। तब यातायात के सबसे बड़ा साधन रथ ही हुआ करता था, इसीलिए रथ पार हो सके, इतनी चौड़ाई है पुल की। इस पूरे स्थान पर जो पत्थरों की सोलिंग की गई है, वह सोलिंग भी ऐसे पत्थरों से की गई है, जिनकी आयु हजारों वर्षों की है। बीच में पुल ऊंचा रखा जाता था, जिससे पुल पर वर्षा ऋतु का पानी न जमा हो सके। पानी का भार पुल को खराब करता है, यह तथ्य तब के लोग जानते थे। बीचों बीच उस ऊंचाई को इंगित करने के लिए दोनों साइड में दो बड़े मीनार बनाए गए हैं।

ये मीनार बताते हैं कि मीनार बनाने की तकनीक हमारी देशी तकनीक है और यह तकनीक पूरी दुनिया ने हमसे सीखी है, न कि हमने किसी से सीखा है। जब बीच की ऊंचाई से रथ आगे बढ़ता था, तो ढलता था, इसको रोकने के लिए पुल के अंत में सतह से अधिक ऊंचाई के पत्थर दोनों तरफ लगाए गए हैं, जिससे रथ की ढलती हुई गति पर विराम लगाया जा सके और घोड़ों पर भार या झटका न पड़े। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि हम जानवरों को जानवर न समझ, अपने जैसा ही समझते थे। आत्मवत सर्व भूतेषु।

यह पुल आज के इंजीनियरिंग के लिए एक चैलेंज है। आज के इंजीनियर्स को ऐसे हुनर सीखना चाहिए कि वो श्रीकृष्ण के इस पुल जैसा पुल बना सकें, जो पुल 6 हजार वर्ष तक टिक सके और उसके बाद भी उपयोगी बना रह सके। यह तकनीक ही भवन निर्माण और मंदिर निर्माण में भी काम आ जाएगा। इस पुल के निर्माण के लिए ऐसी भूमि का चुनाव भी किया जाता है, जहां कोई स्ट्रक्चर इतने लंबे समय तक टिक सके। ऐसी आधारभूमि का चुनाव अयोध्या में भी किया गया, उचित आधार पर न मिला तो मिर्जापुर के पत्थरों से आधारभूमि बनाया गया। इस पुल के एक तरफ अर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया का एक बोर्ड लगा है, जो बहुत धुंधला हो गया है, पढ़ने योग्य नहीं रह गया है। इससे यह स्पष्ट कि पहले यह रचना एएसआई द्वारा मेंटेन किया जाता रहा था और आज की स्थिति देखकर पता लग रहा है कि अब यह उनके मेंटेनेंस में नहीं है। किन्तु इस रचना को श्रीकृष्ण ने देखभाल के बिना भी कार्य योग्य बनाया था।

फिंगर मंकी

दुनिया का यह सबसे छोटा बंदर है। वैसे तो इसका नाम "पिग्मी मार्मोसेट" है, परंतु उंगली के बराबर होने के कारण इन्हें "फिंगर मंकी" बोला जाता है। इनकी लंबाई मात्र 15 सेंटीमीटर होती है, जबकि इनकी पूंछ, इनकी लंबाई से थोड़ी बड़ी लगभग 20 सेंटी मीटर होती है। वजन में यह मात्र 100 ग्राम के लगभग होता है।

विजय सिंह
रुद्रपुर, उत्तराखंड

ये बंदर मूल रूप से दक्षिणी अमेरिका के पश्चिमी अमेजन नदी के किनारे आर्द्रता वाले जंगलों में पाए जाते हैं। यद्यपि इन्हें घरों में भी पाला जा सकता है, परंतु इसके लिए विशेष रूप से बाड़ा तैयार करना पड़ता है, जिसमें लकड़ी का फर्श होना अनिवार्य है। फर्श को रोजाना पानी से भिगोना पड़ता है, जिससे कि आर्द्रता बनी रहे। प्रत्येक वर्ष ये फर्श बदल दिए जाते हैं। इनके बाड़े का तापमान 18 से अधिकतम 24 डिग्री सेल्सियस रखा जाता है। इनका भोजन रस, गोंद और लेटेक्स है। इसके अतिरिक्त ये कभी-कभी छिपकली और छोटे कीड़े-मकोड़े भी खाते हैं।

जंगलों में ये पेड़ पर सोते हैं। इनकी उम्र 15 से 20 साल होती है, परंतु अक्सर पेड़ पर सोते समय गिर जाने के कारण इनकी मृत्यु भी हो जाती है। ये बंदर इंसानों की तरह ही परिवार के रूप में जिंदगी बसर करते हैं। नर और मादा एक साथ रहते ही नहीं, बल्कि मिलजुल कर अपने बच्चों की देखभाल करते हैं। मादा बंदर साल में दो बार जुड़वा बच्चे देती है। ये अत्यंत बुद्धिमान होते हैं, परंतु जल्दी ऊबने के स्वभाव के कारण, तुरंत तनावग्रस्त भी हो जाते हैं।

विनिमय दर के आधार पर टैक्स का निर्धारण

इर्श्किन के कार्यकाल में ही 1844 में भांडेर, मोठ और गरौठा परगनों को झांसी को लौटा दिया गया। इनके समय में रोज द्वारा किया गया बंदोबस्त 1850 में समाप्त हो गया। अतः इन पर नया बंदोबस्त करने का भार पड़ा। कहा जा सकता है कि इनके द्वारा किया गया बंदोबस्त सबसे अच्छा था। इनके पहले खेतों के नक्शे आदि नहीं बनते थे। इन्होंने जिले में पंजाब के पटवारी सिस्टम को लागू किया।

देवेन्द्र कुमार सिंह
इतिहासकार, जालौन

इनके आधीन इस कार्य के लिए जो अधिकारी और कर्मचारी नियुक्त किए गए उनका विवरण इस प्रकार है। तहसीलदार -13/ मुख्य सदर अमीन -1/ अंकों वांटेड सहायक-8/व्यक्तिगत सहायक-1 (मफिदारों की इन्क्वारी करने के लिए) इर्श्किन द्वारा किया गया बंदोबस्त 1850 में पूरा हुआ। यह 1850 से 1555 तक पांच वर्ष तक के लिए था। इस बंदोबस्त में कालपी और कोंच शामिल नहीं था। इन्होंने केवल 9 परगनों का ही बंदोबस्त किया था। इनके द्वारा किया गया बंदोबस्त इस प्रकार था। इर्श्किन द्वारा किए गए बंदोबस्त की जमा – 9,87,955 रुपये दोनों जमा में 23187 रुपये का अंतर इस कारण है कि किसी परगने की जमा में कुछ कमी की गई थी और किसी में बढ़ोतरी की गई। कमी 11930 रुपये की और बढ़ोतरी 35117 रुपये की गई थी। इनके द्वारा ही परगना माधोगढ, इंदुरखी और भांडेर का भी बंदोबस्त किया गया था। इनकी सरकारी डिमांड 4,41,612 रुपये निश्चित की गई। सभी अंग्रेज अधिकारियों का मुख्य कार्य कंपनी के खजाने को भरना ही था। ये भी कैसे पीछे रहते। जालौन जिसका बंदोबस्त रोज ने 6,08,428 रुपये में किया था और जिसकी वसूली ही मुमकिन नहीं थी उसको बढ़ाकर इन्होंने 6,60,886 रुपये कर दिया, परंतु इर्श्किन के कार्यकाल में यहां पर बहुत से ऐसे कार्य हुए, जो जालौन के इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं।

अभी तक सरकारी खजाने में जो टैक्स जमा होता था वह देशी सिक्कों में होता था। इर्श्किन ने आदेश किए कि अब वह कंपनी के रुपये में जमा होगा। यदि कोई देशी सिक्के में जमा करेगा तो उसको विनमय दर के अनुसार देना पड़ेगा। इसके लिए एक्सचेंज रेट (विनिमय दर) निर्धारित की। उस समय जिले में बहुत प्रकार के सिक्के प्रचलन में थे। इर्श्किन के समय में ही 100 रुपये के वजन का सेर प्रचलन में लाया गया, लेकिन कहीं कहीं 100 रुपये और 106 का भी प्रचलन में था। माधोगढ़ का सेर 101 रुपये के वजन का था, जबकि आता का सेर 96 रुपये भर का था। उरई और कोंच में पयला से तौल की जाति थी। यह लकड़ी का बना होता था, जिसमे पांच सेर अनाज आता था। कहीं पर आठ सेर का पयला भी होता था। इसके अलावा एक सेर के लिए चुरा, आधा सेर के लिए अधारो और चौथाई सेर के लिए पटोली और दो छटांक के लिए कुरी का प्रयोग होता था। पटवारियों के लिए पहले वेतन के बदले भूमि देने का चलन था इर्श्किन ने इसको समाप्त करके रुपये देने का प्रावधान किया।

पचास घरों पर एक चौकीदार के नियुक्त करने का भी निर्णय लिया गया। इसके साथ ही डिस्ट्रिक्ट डाक सेवा की नींव इसी समय पड़ी, जिसके लिए जमीदारों को प्रेरित किया गया कि वे जो टैक्स देतें हैं, उसके साथ ही एक छोटा सा प्रतिशत डाक सेवा के लिए भी दें। आमजन को न्याय कैसे मिले इसकी तरफ भी इर्श्किन ने ध्यान दिया। जनता को न्याय सुलभ करने के लिए सहायक प्रभारी परगना को फौजदारी के मुकदमे सुनने के लिए अधिकृत किया, जिसमें एक वर्ष तक की सजा और 200 रुपये तक का जुर्माना किया जा सकता था। इससे ऊपर के मुकदमे की सुनवाई उनके खुद की अदालत से शुरू होती। ये असिस्टेंट हर प्रकार के राजस्व मामलों की सुनवाई करते जो लोवर कोर्ट (तहसीदार) से उनके पास आते उनका क्रियान्वन भी करवाते। बाद में मुख्य सदर अमीन की नियुक्ति हुई, जो 600 से 5000 रुपये तक सिविल और परगना कोर्ट के आदेश के खिलाफ अपील की सुनवाई करता। सुपरिटेंडेंट खुद सदर अमीन के फैसले के खिलाफ अपील की सुनवाई करता। उसके पास वे सब केस सुने जाते, जो पांच हजार से ऊपर के होते।

फौजदारी के मुकदमे में इर्श्किन के पास मजिस्ट्रेट की पूरी पावर थी। वे सब मुकदमे, जिसमें सजा एक वर्ष से ज्यादा की होती, उनकी अदालत में ही शुरू में पेश होते तथा इनके फैसले के खिलाफ अपील झांसी में तैनात एजेंट टू गवर्नर जनरल फॉर बुंदेलखंड के यहां होती। जिले की पुलिस भी इर्श्किन की मातहती में थी, क्योंकि जिले में अभी पुलिस सुपरिटेंडेंट का पद सृजित नहीं किया गया था। पुलिस और क्रिमनल रूल अभी वही लागू थे, जिनको बांदा में तैनात गवर्नर जनरल के एजेंट मि. फ्रेशर ने बनाए थे, जिनमें थोड़ा फेर बदल कर्नल स्लीमन ने किया था।